एकादशाह श्राद्ध सामग्री

शय्यादान

☐ चारपायी-गद्दा-चदरा-तकिया-रजाई आदि शय्या पर बिछाने ओढ़ने के लिए सामग्री-यथाशक्ति वस्त्र-पहनने के लिए कपड़ा आदि।

☐ फल-मिठाई-पंचमेवा-तेल-साबुन-कंघा-माला-पुस्तक-पूजन-सामग्री खड़ाऊँ या खटपटी आदि यथाशक्ति

☐ आसन-बरतन-छाता-छड़ी

☐ पंखा-दीपक-लालटेन आदि यथाशक्ति

☐ जूता या चप्पल

☐ १ हाथ का लोहे का छड़

☐ सप्तधान्य-सवापाव

[तिल-गेहूँ-जवा-चना-उरद-सावां-ककुनी]

☐ षड्रस-सवापाव

गुड़-घी-कड़ूतेल-नमक-मिर्चा-खटाई

१ ताँबे की कटोरी

१ हाथ पीला कपड़ा

१ हाथ लाल कपड़ा

१ हाथ सफेद कपड़ा

४ सुवर्ण प्रतिमा

[विष्णु, यम, कांचनपुरुष, द्विजदम्पती]

१ चाँदी की प्रतिमा द्विजदम्पती

सौभाग्यवती स्त्री हो तो सोहाग पेटारी सौभाग्य वस्तुएँ भी शय्या पर रखें

☐ १ साल के लिए भोजन हेतु अन्न

☐ ७ टुकड़ा ऊँख १-१ हाथ

५ हाथ सुतली

२ हाथ लाल रेशमी डोरा

१ मिट्टी का घड़ा

१ सीधा चावल-दाल-आटा आदि

बरतन में ५ बरतन लोहे का अवश्य होना चाहिए

वरण सामग्री

१ धोती १ लोटा १ अंगौछा

पूजन सामग्री

१०० पत्ता पलाश का

५० दोनिया या दियाली

१० पत्तल

१ बड़ी हाड़ी खीर पकाने हेतु

[खीर अलग-अलग पकाना है, तो १६ करई पुरवा]

रूई थोड़ी सी बत्ती बनाने के लिए

कच्चा सूत १ कुखड़ी

चीनी २०० ग्राम

१ किलो चावल

५ करई-पुरवा-कुल्हड़ मिट्टी का

गोबर की कंडी खीर पकाने हेतु

१५ पियाला मिट्टी का

१०० ग्राम सरसों या तिल का तेल

१ पैकेट अगरबत्ती

Meme

१० ग्राम देसी कपूर
शुद्ध मिट्टी वेदी बनाने हेतु
कुशा मोटक पैंती बनाने के लिए
दियासलाई
ब्राह्मण भोजन की सामग्री
५० ग्राम देसी घी
५० पान ५० सुपारी
१ छटाँक तिल काला
२ जोड़ा जनेऊ
२ किलो गौ का कच्चा दूध
घिसा हुआ चंदन चढ़ाने हेतु
सफेद फूल १००
फूल माला—५
१० ग्राम पीली सरसों
१ छोटी शीशी शहद
ब्राह्मण के लिए लगा पान बीड़ा

टिप्पणी—यह सामग्री संक्षेप में आवश्यक समझ कर लिखी गयी है दान आदि के लिए अपनी श्रद्धा तथा शक्ति के अनुसार देना चाहिए। मृतक को जो वस्तु प्रिय रही हो, वह अवश्य देना चाहिए।

सपिण्डन श्राद्ध सामग्री

घिसा चंदन, काली तिल-५० ग्राम
पीली सरसों १० ग्राम, जवा-१० ग्राम,
रूई-दियासलाई-कपूर १० ग्राम,
घी १०० ग्राम, शहद १ शीशी,
चीनी १ पाव, कच्चा सूत, सफेद फूल ५०,
१५ पान-१५ सुपारी
१ किलो कच्चा गौ का दूध
३ पाव चावल
चांदी का तार २ बीता लम्बा
५० पत्ता पलाश (छिऊल) का
२० दोनिया या दियाली छोटी
१० पियाला मिट्टी का
५ कुल्हड़ मिट्टी का
१ छोटी हांडी खीर पकाने हेतु
गोबर का कंडा खीर पकाने हेतु
शुद्ध मिट्टी वेदी बनाने हेतु
१०० ग्राम तिल या सरसों का तेल
कुशा-मोटक-पैंती
१ पैकेट अगरबत्ती

टिप्पणी : एकादशाह के दिन ही सपिण्डन भी करना है। तो इन सामग्रियों को मिलाकर एक साथ सामग्री ले लें, सपिण्डन श्राद्ध के लिए बचाकर अलग रखे रहें।

एकादशाह श्राद्ध

☐ ग्यारहवें दिन श्राद्ध स्थल को गौ के गोबर से लीपकर शुद्ध कर लें।

☐ काला तिल और सरसों छिड़क कर पवित्र कर लें।

☐ गौ के गोबर के कंडे की अग्नि पर शुद्ध मिट्टी की नयी हांडी में खीर पकने के लिए रख दे।

☐ श्राद्ध स्थल को नव भागों में अनुमान से भाग कर ले।

☐ पूर्व के ३ भाग में शय्या लगा दे।

☐ शय्या का सिरहाना उत्तर तथा पैताना दक्षिण दिशा की ओर रहे।

☐ शय्या के ऊपर विस्तर कपड़ा आदि रख दे।

☐ छाता-छड़ी-जूता-पंखा-पूजासामग्री-दीपक-लौहदण्ड आदि अलग रख दे। इनका संकल्प अलग से होता है

टिप्पणी—

☐ श्राद्ध किसी बाग-बगीचा-नदी तट पर पीपल वृक्ष के नीचे होता है।

☐ जहाँ दश दिन की क्रिया है, वहाँ यदि किया जाय तो उत्तम कहा गया है।

☐ घर द्वार पर यह श्राद्ध नहीं होता।

☐ दक्षिण के तीन भाग में शुद्ध मिट्टी से १-१ बीता लम्बी चौड़ी १६ वेदी बना दे।

☐ वेदी दक्षिण दिशा की ओर ढालू रहना चाहिए। जिससे उस पर का जल दक्षिण दिशा की ओर बहे अपनी ओर नहीं आए

☐ वेदी को साफ कर ले कोई तिनका, ढेला, कीड़ा आदि नहीं रहे।

☐ शुद्ध जल से वेदी को सींच दे।

☐ सभी १६ वेदी के दक्षिण की ओर ८ अंगुल दूर १६ तिन्ना (चट-आसन) हर वेदी के सामने १-१ लगा दें।

☐ हर तिन्ना आसन के आगे (वेदी तथा आसन के बीच) १-१ पत्ता भोजन पात्र के लिए रख दे।

☐ हर भोजन पात्र पर १-१ दोनिया अर्घपात्र के लिए रख दे।

टिप्पणी–

☐ श्राद्ध स्थल पर—पश्चिम-दक्षिण के कोने में खीर पकाना प्रशस्त कहा गया है।

☐ धर्म सिन्धु के अनुसार कुछ ऋषियों ने १६ पिण्ड के लिये १६ पात्रों में खीर पकाने को कहा है। कुछ ऋषियों का मत है कि एक साथ १६ पिण्ड देने पर एक ही पात्र में खीर पकाना चाहिए। देशाचार मानना चाहिए।

☐ खीर लोहे के पात्र में नहीं पकाना चाहिये तथा लोहे की कलछुल से चलाना भी नहीं चाहिये।

☐ कोई सरकंडा या लकड़ी खीर चलाने में उपयोग करना चाहिए।

- ☐ प्रत्येक अर्धपात्र (दोनिया) में १-१ कुश पवित्री गांठ लगाकर रख दे।
- ☐ ३ कुशा एक में मिलाकर उसका अग्रभाग एक साथ बांध ले। इसे त्रिकुश कहते हैं, इसी से पूजा होती है।
- ☐ १-१ कुशा को बीच से मोड़कर आगे गाँठ लगा लें। कुल १७ मोटक तैयार करें जो प्रेत आसन और पूजा के लिए प्रयुक्त होगा।
- ☐ कुशा के बीच की दो पत्ती निकालकर बट लें, गांठ लगा ले। इसी तरह ३ कुशा को बट कर गांठ लगा ले। जिसे पवित्री या पैंती कहते हैं।
- ☐ २ कुशा वाली दाहिने हाथ में ३ कुशा वाली पैंती बाएँ हाथ से पहनी जाती है।
- ☐ सरसों या तिल के तेल का १ दीपक जलाकर (दक्षिण की ओर दीपक का मुख रहे) एकान्त में रख दें, श्राद्ध तक बुझे नहीं, सावधानी से प्रबन्ध कर दें।

टिप्पणी—

- ☐ खीर पक जाने की स्थिति में शहद-घी-चीनी उसमें छोड़ दें।
- ☐ बार-बार खीर को चलाना या देखना मना है।
- ☐ दीपक में एक ही बाती लगाई जाती है।
- ☐ पलाश के ३-३ पत्तों को एक में मिलाकर १६ तिसा, जिसे चट या आसन भी कहते हैं, बना ले।

- ☐ कुश पवित्री के लिये कुशा के बीच की एक पत्ती निकाल कर गांठ लगा लें।
- ☐ और इसे सभी १६ दोनिया में १-१ रख दे।
- ☐ खीर पक जाने पर श्राद्ध प्रारम्भ करे।

नोट—

- ☐ इस पद्धति में १६ श्राद्ध एक साथ करने की प्रक्रिया लिखी गई है। आद्य श्राद्ध की विधि अलग से नहीं दी गई है। जो आद्य श्राद्ध अलग से करना चाहें वे मेरी पुस्तक ''आद्यश्राद्धविधि'' देखें।
- ☐ इस पद्धति में क्रमवार प्रक्रिया लिखी है, इसी प्रकार आप कराते चले जाएंगे। कहीं कोई अटकाव नहीं होगा।

।।श्राद्ध प्रारम्भ।।

- ☐ श्राद्धकर्त्ता शय्या के पश्चिम पूर्व की ओर मुख करके बैठे।
- ☐ महाब्राह्मण—श्राद्धकर्त्ता के दक्षिण-उत्तर की ओर मुख करके बैठे।
- ☐ श्राद्धकर्त्ता अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर कुशा से जल छिड़के—

ओम् अपवित्रः पवित्रो व सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

☐ तीन बार आचमन करे

ओम् नारायणाय नमः। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः।।

☐ हाथ धो ले

ओम हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

☐ पवित्री पैंती पहने

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत् कामः पुने तच् छकेयम्।।

☐ प्राणायाम करें। तीन बार गायत्री राम-राम जप ले।

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

टिप्पणी— ☐ कुछ लोग पहले आद्य श्राद्ध करते हैं। उसके बाद शय्यादान तथा एकादशाह का श्राद्ध करते हैं।

☐ कुछ लोग आद्य श्राद्ध के लिये कुश मोटक का आसन देकर शय्यादान करते हैं।

☐ कुछ लोग शय्यादान के पूर्व-गौर-कलश का पूजन करते हैं।

— यह सब देशाचार जानना चाहिये।

ब्राह्मणवरण

☐ एक दोनिया में जल लेकर ब्राह्मण का तीन बार पांव धोए।

आधि व्याधि हर नृणा मृत्यु दारिद्र्य नाशनम्।
श्री पुष्टि कीर्तिदं वन्दे विप्र ते पाद पंकजम् ।।
ब्राह्मण चरणाभ्यां नमः ।।

☐ हाथ धोकर ☐ ब्राह्मण के माथ में चंदन-अक्षत लगा दे।

गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीम् सर्वभूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।

☐ ब्राह्मण को फूलमाला पहना दे।

टिप्पणी— १. दाहिने हाथ में २ कुशा की, बाएँ हाथ में ३ कुशा की पवित्री पहने।

२. कुछ लोग शय्यादान के लिए प्रतिज्ञा संकल्प भी करते हैं— अद्य मम पितुः .... गोत्रस्य ..... प्रेतस्य [मातुः ..... गोत्रायाः .... प्रेतायाः] समस्त पापक्षय पूर्वक अप्सरोगण सेवायुत विमानकरण केन्द्र पुरगमनोत्तर षष्ठि सहस्त्र वर्षाधिकरणक क्रीडा श्रीसंघ समावृत्त सर्वलोक महिमत्व तदुत्तर षष्ठि योजन मंडल राज्य भोगान्तर शिव सायुज्यावाप्तये शय्यादानमहं करिष्ये।।

☐ दाहिने हाथ में कुश-जल अक्षत-द्रव्य-धोती-लोटा-अंगौछा लेकर

☐ बाएँ हाथ से ब्राह्मण का घुटना छूते हुए

☐ वरण संकल्प करे

अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि पितुः ... गोत्रस्य ... प्रेतस्य [मातुः ... गोत्रायाः ... प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्ग प्राप्ति कामनया च कर्त्तव्य शय्यादानादि कर्मणि एभिः वरणद्रव्यैः अमुक गोत्रं शर्माणं शय्यादान प्रतिग्रहीतृत्त्वेन त्वां वृणे ।।

☐ संकल्प पढ़कर वरण सामग्री ब्राह्मण को दे दें।

☐ ब्राह्मण वरण लेकर कहे—"वृतोऽस्मि"

।। शय्यादान ।।

☐ शय्या पूजन करे

☐ तीन वार शय्या पर जल छिड़के, चंदन-तिल-अक्षत फूल चढ़ा दें। वाक्य पढ़ता रहे

।। सोपकरण शय्यायै नमः ।। प्रमाण्यै देव्यै नमः ।।

☐ शय्या के ऊपर १ स्वर्ण प्रतिमा रख दें

☐ प्रतिमा को शुद्ध जल से धोकर शुद्ध कर लें। ☐ एक पान पर रखकर शय्या पर रखें

☐ एक फूल लेकर प्रार्थना करें

।। ओम् मनोजूतिर् जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर् यज्ञ मिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन् तामोम् प्रतिष्ठ ।।

।। ओम् विष्णवे नमः ।। इहागच्छ - इहतिष्ठ - मम संमुखो भव ।।

अत्र स्थापयामि-पूजयामि ।।

☐ फूल प्रतिमा पर चढ़ा दे ☐ यथा विधि पूजा कर दे।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे। ।। इमां सोपकरण शय्यां ददानि ।।

☐ ब्राह्मण कहे। ।। ददस्व ।।

☐ कुशा से शय्या पर चुपचाप फिर जल छिड़क दे।

टिप्पणी—

☐ विष्णु की प्रतिमा रखने पर सव्य हो शय्यादान करना चाहिए।

☐ प्रेत में "प्रेताय नमः" ।। विष्णु प्रतिमा में ।। विष्णवे नमः । कहते हुये पूजा करें।

प्रार्थना में भी—प्रेतस्य अथवा विष्णोः—एक कहना चाहिए।

☐ कुश अक्षत-जल लेकर शय्या तथा ब्राह्मण की एक परिक्रमा करे

☐ बाएँ हाथ से शय्या पकड़े हुए शय्या संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः ..... गोत्रस्य .... प्रेतस्य [अस्मद् मातुः... गोत्रायाः... प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया प्रेतस्य (प्रेतायाः) सकल नरक यातना धर्मशीतादि बाधा याम्य पुरुषाहार निवृत्तिपूर्वक अनेक कल्पान्त पुरन्दरादि सकल लोक प्राप्त्यर्थम् स्वर्ग लोक गमन वास सुशयनार्थ कामनया च इमां शय्यां सोपकरणां विष्णुदैवतां मनुदैवत्यां [वा] आसादित वस्तु समन्वितां उत्तानाङ्गिरो दैवतां गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में कुश-अक्षत जल दे दे।

☐ कुछ लोग शय्या पर विष्णु के स्थान पर प्रेत प्रतिमा रखकर पूजा करने के बाद शय्यादान करते हैं।

☐ कुछ लोग सव्य होकर कुछ लोग अपव्यय होकर शय्यादान लिखते हैं।

☐ शय्या पर प्रेत प्रतिमा रखने पर अपसव्य होकर शय्यादान करें, बाद में सव्य होकर आचमन कर लेना चाहिए।

☐ ब्राह्मण दाहिने हाथ से शय्या छू ले ☐ कहे ।। स्वस्ति ।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् शय्यादान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थम् दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।।

☐ ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।

☐ श्राद्धकर्त्ता हाथ जोड़ कर शय्या की प्रार्थना करे

यथा न कृष्ण शयनं शून्यं सागर जातया।।
प्रेतस्यापि तथा शय्या अशून्या जन्म जन्मनि।।
यस्माद शून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च।
प्रेतस्यापि तथा शय्या अशून्या जन्म जन्मनि।।
प्रेतस्य (विष्णोः) प्रतिमायुक्ता सर्वोपकरणैर्वृता।
प्रेतशय्या मया ह्येषा तुभ्यं विप्र निवेदिता।।

।। कांचन पुरुषदान ।।

- ☐ आचमन-प्राणयाम-गायत्री का जप करे
- ☐ अपने सामने भूमि पर एक आसन (पत्तल) पर लाल रंग के कपड़े पर १ सोने की प्रतिमा और १ फल रखे।
- ☐ प्रतिमा पर अक्षत छोड़ें
- ☐ मन्त्र पढ़ें—

।। 'इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं । समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा ।।

।। मनोजूतिर् जुषता माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु ।। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।।

- ☐ प्रतिमा का पूजन कर दे ☐ ३ बार जल छोड़े ☐ गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दे।
- ☐ ब्राह्मण पर जल छिड़के ☐ चन्दन-अक्षत-फूल छोड़े-कहे ।। देय ब्राह्मणाय नमः ।।
- ☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे—कहे—

।। ओम् इदम् फल वस्त्र समन्वितं कांचन पुरुषं ते ददानि ।।

- ☐ ब्राह्मण कहे– ।। ददस्व ।।
- ☐ कांचन पुरुष पर फिर जल छिड़क दे।
- ☐ कुश-जल-अक्षत [कुछ लोग तिल लेकर लिखते हैं] लेकर संकल्प करे।

अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तम लोक गमन कामनया इमं फलवस्त्र समन्वितं कांचन पुरुषं विष्णु दैवतं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

- ☐ ब्राह्मण के हाथ में कुश-जल-अक्षत दे दे। ☐ ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।
- ☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता संकल्प करें।

।। अद्य कृतैतत् फल वस्त्र समन्वित कांचन पुरुषदान प्रतिष्ठार्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।।

☐ कुछ लोग प्रतिज्ञा संकल्प भी करते हैं—''अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अमुक गोत्रस्य प्रेतस्य [गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक स्वर्गादि उत्तम लोक फल प्राप्ति कामनया फलवस्त्र समन्वितं कांचन पुरुष पूजनमहं करिष्ये।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे ☐ ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।

☐ श्राद्धकर्त्ता हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

अज्ञानं ज्ञान सद्भाव भूत भूतेश नाशय ।
कांचनं पुरुषं देवं भक्त्या त्वां प्रणमाम्यहम् ।।

☐ आसन पत्तल फल आदि सहित कांचन पुरुष उठाकर ब्राह्मण को दे दे।

।। द्विजदम्पती पूजन ।।

☐ श्राद्धकर्त्ता दाहिने हाथ के अंगूठे से अपना नाक कान छू ले।

☐ गायत्री का जप कर ले।

☐ अपने सामने भूमि पर एक आसन [पत्तल] रखे।

☐ इस आसन [पत्तल] पर सफेद कपड़ा रख दे।

☐ कपड़ा पर १ सोने की प्रतिमा तथा १ चांदी की प्रतिमा रखे।

☐ दाहिने हाथ में कुश-तिल (अक्षत) जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] स्वर्गलोक प्राप्ति कामनया द्विज दम्पती पूजन महं करिष्ये ।।

☐ हाथ का कुश-तिल (अक्षत) जल-सामने भूमि पर छोड़ दे।

☐ दोनों प्रतिमा की पूजा कर दे।

।। द्विज दम्पतीभ्यां नमः ।।—यह वाक्य कहता रहे।

☐ तीन बार जल छोड़े—गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नेवैद्य - आचमन-फल-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दे।

☐ दाहिने हाथ में जल लेकर कहे—

।। एतानि गन्धाक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-पूगीफल-दक्षिणा-द्रव्याणि द्विज दम्पतीभ्यां नमः ।।

☐ हाथ का जल प्रतिमा के सामने भूमि पर छोड़ दे।

☐ दोनों प्रतिमा वस्त्र तथा पूजन सामग्री सहित उठाकर माथ लगाये।

☐ मन में भगवान का ध्यान करें। ☐ ब्राह्मण को प्रतिमा दे दे।

।।दान प्रक्रिया।।

।। छाता दान ।।

☐ छाता पर जल गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे।

☐ ब्राह्मण के ऊपर भी चन्दन-अक्षत-फूल चढ़ा दे।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे। कहे ।।इदं छत्रं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।।ददस्व।।

☐ छाता पर फिर जल छिड़क दे। कुछ-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मत् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया यममार्गे घोर आतप धर्मनिवारणार्थम्-इदं छत्रम्-

विशेषः

☐ कुछ लोग दान साजात्य से यहीं पर छाता-जूता आदि का भी दान कर देते हैं।

☐ कुछ लोग षोडश श्राद्ध के लिए आसन दान के बाद शेष दान प्रक्रिया पूरी करते हैं।

☐ ।। दान प्रक्रिया सुविधा के लिये यहीं पर दे दी गई है।।

☐ कुछ लोग तिल लेकर संकल्प लिखते हैं, कुछ लोग अक्षत लेकर लिखते हैं। देशाचार जानना।

उत्तानांगिरस दैवतं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ हाथ का कुश अक्षत ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुशा-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् छत्रदान प्रतिष्ठार्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

।।इहा मुत्रात पत्राणां कुरु मे केशव प्रभो।
छत्रं त्वत् प्रीतये दत्तं ममास्तु च सदा शुभम्।।

।। जूता का दान।।

☐ जूता पर तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे।

।। उपानद्भ्यां नमः ।। देय ब्राह्मणाय नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे—।।इमे उपानहौ ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे—।। ददस्व।।

☐ जूता पर फिर जल छिड़के ☐ कुश-अक्षत-जल-लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मत् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया उच्चावच्च खर तर किरण सन्तप्त वालुकाभिः असिपत्र वनोपकण्टकित भू दुर्ग संतरण कामश्च इमे उपानहौ उत्तानांगिरस् दैवते गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को कुश-जल-अक्षत दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे—।।स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् उपानत् दान प्रतिष्ठा-सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।।स्वस्ति।।

☐ जूता प्रार्थना—

।। उपानहौ प्रदत्ते मे कंटकादि निवारणे।।
यममार्गेषु सुखदे अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

।। सूपौदन [बरतनों] का दान।।

☐ बरतन पर तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे।

।। सूपौदन पंच पात्रेभ्यो नमः। देय ब्राह्मणाय नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे

।। अद्य सूपौदन पंच पात्राणि ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।। ददस्व।।

☐ बरतनों पर फिर जल छिड़के। कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्गादि उत्तमलोक वास कामनया च सूपौदन पंच पात्राणि भोजनपाकार्थम् करणार्थम् च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को कुश-अक्षत-जल दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-दक्षिणा लेकर सांगता दे

।। अद्य कृतैतत् सूपौदन पंच पात्र दान प्रतिष्ठार्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

।।दीपक संकल्प।।

☐ दीपक तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे

।। दीपकाय ते नमः ।। देय ब्राह्मणाय ते नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे—कहे—।।अद्य दीपं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।। ददस्व।। ☐ फिर दीपक पर जल छिड़क दे।

☐ कुश अक्षत-जल लेकर संकल्प करे

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्ग प्राप्ति कामनया च यम मार्गे अंधकार निवारणार्थम् इदं दीपं [दीवट हो तो—।।दीपाधारंच।। भी कहे] गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

☐ ब्राह्मण को कुश अक्षत-जल दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् दीपदान सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ सांगता ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ प्रार्थना करे—सज्योतिस् तैल पात्रं च दीपयंत्र समन्वितम्।
सुखदं स्यादस्य दानेन प्रेतस्तु सुमनोरथः।।

।।पूजन सामग्री दान।।

☐ पूजन सामग्री तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे।

।। पूजनसामग्र्यै नमः ।। देय ब्राह्मणाय ते नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे—कहे— ।। अद्य इमानि पूजोपकरणानि ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहें ।। ददस्व।।

☐ पूजन सामग्री पर फिर जल छिड़के। कुछ-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्ग प्राप्ति कामनया च इमानि पूजोपकरणानि गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ कुश-अक्षत-जल लेकर सांगता संकल्प करे।

।। अद्य कृतैतत् पूजोपकरण दान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम्-इदम् दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दें। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

।। यमदण्ड [लोहे का छड़] दान।।

☐ यमदण्ड तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे

।। यमदण्डाय नमः।। देय ब्राह्मणाय ते नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे—

।। अद्य इमं यमदण्डं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।। ददस्व।।

☐ फिर यमदण्ड पर जल छिड़क दे। कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्तिकामनया च यम देवता प्रसन्नार्थम् इदं यम दण्डं लौहम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।

☐ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् यमदण्ड दान प्रतिष्ठार्थम् इदम् द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

।। छड़ी दान।।

☐ छड़ी तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे कहे—

।। यष्ट्यैनमः।। देय ब्राह्मणाय ते नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे। ।। अद्य इमां यष्टिं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।। ददस्व।।

☐ फिर छड़ी पर जल छिड़क दे।। कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) उच्चावच्च भू दुर्ग संतरण कामनया इमां यष्टिं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् यष्टिदान सांगता सिध्यर्थम् इदम् द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

।। पंखादान।।

☐ पंखा तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे।

।। व्यजनाय नमः ।। देय ब्राह्मणाय ते नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे— ।। अद्य इदं व्यजनं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे—।। ददस्व।।

☐ पंखा के ऊपर फिर जल छिड़के।

☐ कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) वायोरागमनार्थम् स्वर्गे सुख प्राप्ति कामनया च इदं व्यजनं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता संकल्प करे।

।। अद्य कृतैतत् व्यजन दान सांगता सिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

व्यजनं वायु दैवत्यं यममार्गे सुखप्रदम्।
अस्य प्रदानात् सकलाः प्रेताः सन्तु मनोरथाः।।

।। सप्तधान्यदान।।

☐ सप्तधान्य तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल छोड़ दे।

।। सप्तधान्याय नमः । देय ब्राह्मणाय नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे—।।अद्य इदं सप्तधान्यं ते ददानि।

☐ ब्राह्मण कहे ।।ददस्व।।

☐ ब्राह्मण तथा सप्तधान्य पर फिर जल छिड़के। कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) यम किंकर प्रसन्नार्थम् इदं सप्तधान्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दे ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् सप्तधान्य दान प्रतिष्ठार्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

।। षट्रस दान।।

☐ षट्रस तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे।

।। षट् रसाय नमः ।। देय ब्राह्मणाय नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहेः—।। अद्य इदं षट्रसं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहेः—।।ददस्व।।

☐ फिर ब्राह्मण तथा षट्रस पर जल छिड़क दे।

☐ कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करेः—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] यम देवता प्रसन्नार्थम् इदं षट्रसं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दे ब्राह्मण लेकर कहे—।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् षट्रसदान सांगता सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहम् सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे ब्राह्मण लेकर कहें ।। स्वस्ति।।

।। अन्यदान।।

☐ इसी प्रकार, श्रृंगारदान-पुस्तक-माला आदि जो कुछ वस्तु देना है, [स्त्रियों के लिए सोहाग पेटारी दी जाती है]

☐ उन वस्तुओं पर—क्रमशः जल-गंध-अक्षत-फूल छोड़ दे।

☐ ब्राह्मण के ऊपर भी जल-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दे। कहे—

।। देय वस्तुभ्यो नमः ।। देय ब्राह्मणाय नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे — ।। अद्य इदं वस्तु ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।।ददस्व।।

☐ फिर वस्तु तथा ब्राह्मण पर जल छिड़क दें कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतयाः) प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्गप्राप्ति कामनया च इदं ''वस्तु'' [वस्तु का नाम ले] गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् अमुक वस्तु दान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दें ब्राह्मण लेकर कहे— ।।स्वस्ति।।

नीचे कुछ वस्तुओं की प्रार्थना दी जा रही है। हाथ जोड़कर प्रार्थना कर ले।।

१. सोहाग पेटारी -	वामप्रिया महारम्या सौभाग्यादि च संयुता। वंशैः कृता सुमंजूषा प्रेतायै मोक्षदा भवेत्।।

९. ताम्बूल	सोपस्करं च ताम्बूलं सर्वदा मंगल प्रियम्। प्रियं चैव तु देवानां सौभाग्यं वदनेऽस्तु मे।।
१०. खड़ाऊँ	कण्टकोच्छिष्ट पाषाण वृश्चिकादि निवारणे। पादुके त्वं प्रदत्ता मे प्रेताय शान्तिदा भव।।
११. चामर (चंवर)	शशांककर संकाशः क्षीरडिंडीर पाण्डुरः। प्रोत्सार याशु दुरितं चामरोऽमर दुर्लभः।।
१२. श्रृंगार दान	श्रृंगारदानं दातव्यं प्रेतस्य सुख सौख्यदम्। अनेक वस्तु सहितं प्रेतशान्तिप्रदं भवेत्।।
१३. शीशा दर्पण	दर्शनेन त्वमादर्श नृणां मंगल दायकः। सर्वसौभाग्य सत्कीर्ति निर्मल ज्ञान दायकः।।
४. इत्र (गन्ध)	गन्धो मनोहरो दिव्यः शान्तिदः सुखदस्तथा। तस्मादस्य प्रदानं हि प्रेताय सुखदं भवेत्।।
५. अंगूठी (अगुलीयक)	हिरण्यगर्भ सम्भूतं सौवर्णम चाङ्गुलीयकम्। सर्वप्रदं प्रयच्छामि प्रीणातु कमलापतिः।।

६.यज्ञोपवीत — यज्ञोपवीत दानेन जायते ब्रह्मवर्चसी।
तस्मात्तानि प्रदेयानि ब्राह्मणेभ्यो विपश्चिता।।

७. पुस्तक — सर्व विद्या श्रया यज्ञाः करणं लिखिताक्षरम्।
अस्य प्रदानात् वागीशाः प्रसन्ना जन्म जन्मनि।।

८. माला — यद्-यद् बुद्धि कृतं पापं मनोवाक् काय चाक्षुषम्।
माला प्रदानं कर्त्तव्यं प्रेत शान्ति प्रदं भवेत्।।

।।श्राद्ध प्रारम्भ।।

- ☐ शय्या के पास से उठकर श्राद्ध स्थल पर आ जाय।
- ☐ पूर्व की ओर मुख करके बैठे। त्रिकुश से अपने ऊपर तथा श्राद्ध साम्ग्री पर जल छिड़के—

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकक्षं स बाह्या भ्यन्तरः शुचिः।।

- ☐ ३ बार आचमन करे । नारायणाय नमः । केशवाय नमः । माधवाय नमः।।
- ☐ हाथ धो ले ।।हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।
- ☐ दीपक पर अक्षत-तिल छिड़क कर प्रार्थना करे—

।। हे दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्य विघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्याद् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

- ☐ बाएं हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से उसे ढँक कर निम्न मन्त्र पढ़े—

।।नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः।।

- ☐ दाहिने हाथ से २-२ दाना सरसों चारो दिशा में छिड़के-पढ़े—

पूर्व में —प्राच्यै नमः। दक्षिण में —अवाच्यै नमः।

पश्चिम में —प्रतीच्यै नमः। उत्तर में —उदीच्यै नमः।

ऊपर आकाश में —अन्तरिक्षाय नमः। नीचे भूमि में —भूम्यै नमः।

☐ हाथ की शेष सरसों अपने सामने भूमि पर छोड़ दें।

☐ अपने सामने भूमि पर जल-चंदन-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर पूजन कर दें—

☐ पूजन वाक्य पढ़ता रहे—।।श्राद्धभूम्यै नमः।।

☐ १ कुशा को ३ बार मोड़कर २ दाना तिल लेकर अपनी दाहिनी टेट में (धोती में) लपेट लें— मन्त्र पढ़ें।

१. निहन्मि सर्वम् यद मेध्य कृद् भवेत्। हताश्च सर्वेऽसुर दानवा मया।
यक्षांसि रक्षांसि पिशाच गुह्यका हतामया यातुधानाश्चसर्वे।।

२. सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्यो—
निरसि सुसस्याः कृषी स्कृधि।

☐ कुछ लोग बाएँ टेंट में खोसने को लिखते हैं।

☐ त्रिकुश-अक्ष-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें—

अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) प्रेतत्व विमुक्ति कामः षोडश श्राद्धान्तर्गत—(१) आद्य श्राद्धं तथा च, (२) प्रथम मासिक, (३) त्रैपाक्षिक, (४) द्वितीयमासिक, (५) तृतीयमासिक, (६) चतुर्थमासिक, (७) पंचममासिक, (८) ऊनषाण्मासिक, (९) षाण्मासिक, (१०) सप्तममासिक, (११) अष्टममासिक, (१२) नवम्मासिक, (१३) दशममासिक, (१४) एकादशमासिक, (१५) द्वादशमासिक एवम् (१६) ऊनाब्दिक-संज्ञकानि श्राद्धानि अहं करिष्ये।

☐ कुश-अक्षत-जल भूमि पर छोड़ दें। ३ बार गायत्री का जप करें—ब्राह्मण मन्त्र पढ़ें—

।। देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

टिप्पणी (१)— मलमास होने पर 'षोडश' के स्थान पर 'सप्तदश' पढ़ना चाहिए।
ऊनाब्दिक के बाद 'त्रयोदश संज्ञकानि' पढ़ना चाहिए।

(२)— आद्यश्राद्ध पृथक् से करने पर जहाँ-जहाँ आद्यश्राद्ध शब्द का प्रयोग है उसे छोड़कर पढ़ें, साथ ही १६ के स्थान पर १५ ही आसन-पिण्ड आदि दें।

☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा पहन लें अपसव्य हो। दक्षिण दिशा में मुख करके बैठें। बायां घुटना मोड़ लें।

☐ दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल तथा १६ मोटक आसन के लिए लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) एषु श्राद्धेषु इमानि-आसनानि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।।

☐ संकल्प के बाद इन १६ मोटकों को सामने के १६ तिप्ता आसन कर क्रमशः १-१- रख दें।

☐ पश्चिम से पूर्व की ओर इसी क्रम से रखें।

☐ हाथ में लगा तिल इन्हीं आसनों पर छिड़क दें।

☐ संकल्प वाला मोटक अपने सामने भूमि पर रख दें।

☐ सव्य होकर दाहिने हाथ के अंगूठे की जड़ से अपना नाक-कान छू लें।

नोट— यदि दान-प्रक्रिया शय्यादान के साथ पूरी नहीं की है, तो यहाँ पर करें। जूता-छाता आदि का दान करके आगे का श्राद्ध किया जाय, दान के लिए शय्या के पास फिर जाना चाहिए।

☐ यहाँ कुछ पूर्व से पश्चिम के क्रम से आसनादि देते हैं, इसीलिए मैंने भी प्रथम संस्करण में पूर्व से पश्चिम के क्रम का उल्लेख किया था किन्तु खोज करने पर पूर्व से पश्चिम का कोई लेख नहीं मिला है, अतः इसे देशाचार मान लेता हूँ और नवीन संस्करण में पश्चिम से पूर्व का क्रम दिया गया है।

☐ दान के बाद पुनः श्राद्ध स्थल में आ जाय।

☐ दक्षिण की ओर मुख करके अपने आसन पर बैठे।

☐ अपसव्य हो जाय जनेऊ-अंगौछा दाहिने कंधे पर कर ले।

☐ बाएँ हाथ में तिल लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना तिल सभी १६ भोजन पात्रों पर छिड़क दें।

☐ मन्त्र पढ़े। ।। अपहता असुरा रक्षा ँ सिवे दिषदः।।

☐ दाहिने हाथ में फिर तिल लेकर प्रेत का आवाहन करें—

।।आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष् वात्ताः पथिभिर् देवयानैः।।

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु ते ऽवन् त्वस्मान्।।

☐ हाथ का तिल सभी आसनों पर [१६ मोटकों पर] छिड़क दे।

☐ आसन के सामने रखी सभी १६ दोनियाँ में १-१ कुशा गाँठ लगाकर रख दें [कुश का अग्रभाग दक्षिण की ओर रहे] मन्त्र पढ़ें।

।। पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

☐ सभी अर्घपात्र (दोनिया) में थोड़ा-थोड़ा जल भर दें, मन्त्र पढ़ता रहे—

।। शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शँय्यो रभि स्त्रवन्तु नः।।

☐ सभी दोनिया (अर्घपात्र) में २-२ दाना तिल छोड़ दे, मन्त्र पढ़े—

तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवो देव निर्मितः।

प्रत्न मद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।।

☐ चुपचाप सभी अर्घपात्र में चंदन-फूल छोड़ दें।

☐ सभी १६ अर्घपात्र (दोनिया) से कुशा निकाल-निकाल कर दोनिया के सामने वाले भोजन पात्र (पत्ता) पर उत्तर की ओर अग्रभाग करके रख दें।

☐ जिस दोनिया का कुशा हो उसी के आसन पर रखना चाहिए (ध्यान से रखें)।

☐ संकल्प वाला मोटक लेकर पूजा के लोटा से बोर-बोर कर इन सभी १६ कुशों पर जल छिड़क दें।

☐ दाहिने हाथ से इन १६ अर्घपात्रों (दोनिया) को ढ़के—मंत्र पढ़े—

।। या दिव्या आपः पयसा संवभूवुर् या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास् तान आपः शिवाःश ᳪ स्योना सुहवा भवन्तु।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) एषु श्राद्धेषु एते हस्तार्घाः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

☐ संकल्प करके हाथ का तिल-जल दोनिया पर छिड़क दें। मोटक सामने भूमि पर रख दें।

☐ क्रमशः १-१ अर्घपात्र उठाकर २-२ बूंद जल भोजन पात्र पर रखे कुश-पवित्री पर चढ़ाएँ।

☐ शेष जल आसन मोटक पर चढ़ा दे।

☐ भोजन पात्र पर रखे कुशा को उठा कर दोनिया (अर्घपात्र) में रख दे।

☐ दोनिया आसन के पीछे (दक्षिण में) उलट कर रख दे।

[इसी तरह सभी अर्घपात्र का जल चढ़ाएँ, कुश-पवित्री रखे, अर्घपात्र पीछे उलट कर रखता जाए—मन्त्र पढ़ता जाएः—।।पित्रे स्थान मसि।।

[श्राद्ध के अन्त तक इन उलट कर रखी दोनिया को हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए]

☐ सभी १६ आसन मोटक पर २-२ दाना तिल छिड़क दें।

☐ बाएँ हाथ में १ कुशा लेकर प्रेत का ध्यान करें—

।। इमं लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम्।

मनसा वायुरूपेण विप्रे त्वां योजयाम्यहम्।।

☐ उक्त मन्त्र पढ़कर कुशा दक्षिण में फेंक दें।

☐ सभी १६ मोटक पर चुपचाप मन में पिता (माता) का ध्यान करता हुआः—

चंदन-तिल-फूल-कच्चा सूत-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दें।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) एषु श्राद्धेषु एतानि-गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।।

☐ संकल्प के बाद जल-तिल आसन पर छिड़क दे।

☐ दाहिने हाथ में जल लेकर आसन (भोजन पात्र) के चारों ओर वामावर्त (बाएँ से) घुमा कर भूमि पर छोड़ दे।

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

☐ १ दोनिया में थोड़ा सा जल छोड़कर अग्नि कोण में एक किनारे रख दे।

☐ १ चम्मच पिण्डा वाली खीर हाथ में लेकर तिल-घी लगाकर इस दोनिया में छोड़ दें—मन्त्र पढ़ें—

।। इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः।।

☐ सभी १६ भोजन पात्रों पर फिर दूसरी १-१ दोनिया रख दें

☐ थोड़ा-थोड़ा जल सब दोनिया में भर दें।

☐ सभी १६ भोजन पात्रों पर १-१ बूँद घी तथा आधा चम्मच खीर रख दें।

☐ खीर पर २ बूँद शहद लगा दे।

☐ दोनों हाथ के अंगूठों से शहद छूकर, हाथ को उलटा कर (हथेली नीचे रहे)।

☐ सभी १६ भोजन पात्रों पर रखे घी-खीर-जल को ढ़क ले—या-भोजन पात्रों को छू लें—मन्त्र पढ़ें—

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पर्थिव ँ रजः। मधु द्यौ रस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तुसूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
मधु-मधु-मधु।

☐ बाएँ हाथ से भोजन पात्रों को छूता हुआ—निम्न मन्त्र पढ़ें—

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौ रपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।

(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम्।।

☐ क्रमशः बाएँ उल्टे हाथ से १-१ भोजन पात्र को छूकर दाहिने हाथ के अंगूठे से उस पर का घी-खीर दोनिया का जल ३-३ बार क्रमशः १-१ मोटक आसन पर छुआ दें। निम्न वाक्य पढ़ता रहे-
[जिस पात्र का हो, उसी मोटक पर लगाए-एक दूसरे का उलट फेर न हो।]

खीर — इदमन्नम्। इदमन्नम्। इदमन्नम्।
घी — इदमाज्यम्। इदमाज्यम्। इदमाज्यम्।
जल — इमा आपः। इमा आपः। इमा आपः।
फिर खीर — इदं कव्यम्। इदं कव्यम्। इदं कव्यम्।

☐ सभी १६ भोजन पात्रों पर तिल छिड़क दें। ।। अपहता असुरा रक्षा ꣳ सिवेदिषदः।।

☐ मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करें—

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे ! प्रेते !) एषु श्राद्धेषु इमानि सोपकरणानि दत्तैतानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

☐ हाथ का तिल-जल प्रेतासन पर छिड़क दे—

☐ सव्य होकर-अपना नाक-कान छू लें, गायत्री जप करें—ब्राह्मण पढ़ेः—

(१) मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन् त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर् मधु माँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर् गावो भवन्तु नः।।
।। मधु।। मधु।। मधु।।

(२) अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।
तत् सर्वम छिद्रमस्तु ।।परिपूर्ण मस्तु।।

☐ अपने पैर के नीचे ३ कुशा रखकर निम्न मन्त्रों का पाठ करें—

(१) कृष्णुष्व पाजः प्रसितिन् न पृथ्वीं याहि राजे बाम वाँ इभेन।
तृष्वी मनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्ताऽसि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः।।
(२) तव भ्रमास आशु या पतन् त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः।
तपू ꣳ ष्यग्ने जुह्वा पतंगान सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः।।
(३) प्रति स्पशो विसृज तूर्णि तमो भवा पायुर् विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरे अघ श ꣳ सो यो अन् त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत्।।
(४) उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्म हेते।
यो नो अराति ꣳ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।
(५) ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष् कृणुष्व दैव्या न्यग्ने।
अव स्थिरा तनुहि यातु जूनां जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून्।।

☐ भूमि पर २ दाना तिल छिड़क कर फिर मन्त्र पाठ करे—

उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु।।

☐ पुरुषसूक्त का पाठ करे—

सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमि ँ सर्वतस् पृत्वाऽत्य तिष्ठद् दशाङ्गुलम्। पुरुष एवेद ँ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उता मृतत्व स्येशानो यदन्ने नाति रोहति। एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् सा शना नशने अभि। ततोविराड जायत विराजो अधि पूरुषः। सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः। तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम् भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये। तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ँसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस् तस्मा दजायत। तस्मा दश्वाअजायन्त ये के चो भयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः। तँ यज्ञम्वर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्याऋषयश्चये। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किंबाहू किमूरू पादा उच्येते। ब्राह्मणोऽस्य

मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रोअजायत। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत। नाभ्याआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ अकल्पयन्। यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत। वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् धविः। सप्तास्यान् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्। यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत् साक मिन्द्रः।। नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः।। शङ्कराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च।। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वैः नमः।।

।। विकर पिण्डदान ।।

☐ अपसव्य होकर पहले विकर को पिण्ड दें।

☐ अग्नि कोण में १ किनारे (जिससे कुछ छू न जाए) ३ कुशा का टुकड़ा [दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे] विकर आसन के निमित्त रख दे।

☐ १ दोनिया में १ पिण्डा तिल-घी-शहद लगा कर रख ले, जल ले ले।

☐ ऊपर १ कुशा रख कर दाहिने हाथ से ढँक लें। मन्त्र पढ़े—

अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्।।

☐ अपने आसन से उठकर अग्नि कोण में [जो ३ कुशा-आसन रखा है, उसी पर] पिण्डा सहित दोनिया उलट कर रख दें।

☐ दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दें।

☐ श्राद्ध स्थल से बाहर निकल कर हाथ-पाँव धोकर अपने स्थान पर आकर बैठें।

☐ सव्य होकर अपने ऊपर जल छिड़के—(पूर्व-मुख किए रहें)

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

☐ ३ बार आचमन करें—

।। ओम् नारायणाय नमः । ओम् केशवाय नमः । ओम् माधवाय नमः।।

☐ हाथ धो लें। दोनों हाथ में दूसरी पवित्री (पैंती) पहन लें। भगवान का ध्यान करें

अनादि निधनो देव शंख चक्र गदाधर।
अव्यक्तः पुण्डरीकाक्षः सर्वपापहरो भव।।

☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय, दक्षिण की ओर मुख कर लें।

☐ बाएँ हाथ में क्रमशः १-१ कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से क्रमशः सभी १६ वेदी पर एक-एक रेखा (लाइन) खींच दें—मन्त्र पढ़ें—

।।अपहताअसुरा रक्षा ँ सि वे दिषदः।।

☐ गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर सभी वेदी पर घुमा दे—मन्त्र पढ़ता रहे।

।। ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्ति अग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात्।।

☐ घुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दें।

☐ मोटक से सभी वेदी पर जल छिड़क दें—मन्त्र पढ़ता रहे—

।।अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिका:।।

टिप्पणी—एक ही कुशा से १६ वेदी पर रेखा नहीं करें, हर के लिए अलग-अलग कुशा लें।

☐ लाइन खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर दिशा में फेंकता जाए।

☐ कुशा को बीच से अलग कर ३-३ कुश टुकड़ों को सभी वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दें।

☐ दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे।

☐ सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले—हरि स्मरण करे।

☐ पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें—

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।

☐ अपसव्य होकर—दक्षिण मुख कर लें।

☐ हर वेदी के आगे (अपनी ओर) एक-एक दोनिया रख दें।

☐ दोनिया में थोड़ा-थोड़ा जल भर दें, तिल-चन्दन-फूल छोड़ दें।

☐ मोटक तिल जल लेकर, बाएँ हाथ से सब दोनिया को छू लें। संकल्प पढ़ें—

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) एषु श्राद्धेषु पिण्डस्थानेषु अत्र अवने निग्ध्वं ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

☐ हाथ का तिल जल दोनिया पर छिड़क दें, मोटक अपने सामने भूमि पर रख दें।

☐ एक-एक दोनिया क्रमशः उठा-उठा कर २-२ बूँद जल वेदी पर बिछे कुशा पर चढ़ा दें।

☐ शेष जल सहित दोनिया अपने स्थान पर फिर रखता जाए।

।। पिण्डदान ।।

☐ खीर में तिल-घी-शहद मिलाकर बेल के समान १६ पिण्डा बना लें [थोड़ी खीर बिना तिल की बचाए रहें।]

☐ सभी पिण्डों पर १-१ बूँद शहद लगा दें, हाथ में मोटक लें। बायां पैर मोड़ लें -

☐ क्रमशः १-१ पिण्डा-तिल जल लेता जाय—और संकल्प पढ़-पढ़ कर वेदी पर कुशा के ऊपर रखता जाय।

(१) अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत आद्य श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठाम्।

(२) अद्य पितः गोत्र! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत प्रथम मासिक एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(३) अद्य पितः गोत्र! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत द्वितीय मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(४) अद्य पितः गोत्र! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत त्रैपाक्षिक मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(५) अद्य पितः गोत्र! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत तृतीय मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(६) अद्य पितः गोत्र! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत चतुर्थ मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(७) अद्य पितः गोत्र! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत पंचम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

टिप्पणी— १. पिण्डदान-पितृतीर्थ (दाहिने हाथ के अंगूठा तथा तर्जनी (पहली अंगुली) के बीच से दिया जाता है। दक्षिणाग्र देना चाहिए।

२. मलमास होने पर—(१) ''षोडश श्राद्धान्तर्गत'' के स्थान पर ''सप्तदश श्राद्धान्तर्गत'' कहना चाहिए।

(२) १६ के स्थान पर १७ पिण्ड देना चाहिए, क्रम निम्न प्रकार से होगा—

□ एकादश मासिक (१४) के बाद द्वादश मासिक (१५) फिर ऊनवार्षिक (१६) फिर ''त्रयोदश मासिक'' पिण्ड देना चाहिए—

(८) अद्य पितः गोत्र! (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत षाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(९) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत ऊनषाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१०) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत सप्तम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(११) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत अष्टम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१२) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत नवम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१३) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत दशम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१४) अद्य पितः! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत एकादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१५) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत द्वादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१६) अद्य पितः गोत्र! प्रेत (मातः गोत्रे-प्रेते) षोडश श्राद्धान्तर्गत ऊनवार्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

☐ हाथ का मोटक भूमि पर रख दें, हाथ का तिल पिण्ड पर चढ़ा दें।

☐ पिण्डा के नीचे वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उन सब को छू लें।

☐ सव्य होकर—नाक-कान छू लें, हरि स्मरण करें।

☐ फिर अपसव्य होकर—बायी ओर (पीछे मुख घुमाकर) श्वांस (सांस) को रोके।

प्रेत का ध्यान करता हुआ मुख सामने कर पिण्डों की ओर रोकी हुई श्वास (सांस) छोड़ दें; मन्त्र पढ़े—

अत्र पितर्मादयस्व यथा भाग मा वृषायस्व।
अमीमदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिष्ट।।

☐ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें—बाएँ हाथ से १६ दोनिया छू लें। (जिसका जल वेदी पर चढ़ाया है शेष जल सहित रखी है)

।। अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) एषु श्राद्धेषु पिण्डे अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं ते मया दीयन्ते तवोप तिष्ठन्ताम्।।

☐ संकल्प कर हाथ का तिल-जल जो १६ दोनिया जल सहित सामने रखी है उस पर छिड़क दें;

☐ क्रमशः १-१ दोनिया उठा कर उसका जल-तिल-फूल क्रमशः १-१ पिण्डों पर चढ़ा दें।

☐ दोनिया किनारे अलग फेंक दें।

☐ टेंट में (धोती में) जो कुशा-तिल लपेटा है। उसे निकाल कर नैर्ऋत्य कोण में (अपने दाहिने हाथ दक्षिण की ओर कोने में) फेंक दें।

☐ सव्य होकर—नाक-कान छू लें—भगवान का ध्यान करें। फिर अपसव्य हो जाय।

☐ बाएँ हाथ में सूत लेकर दाहिने हाथ से पकड़कर प्रत्येक पिण्डा पर अलग-अलग चढ़ा दें, निम्न मन्त्र पढ़ता रहे—

नमस्ते पितः रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय।
नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर् मन्यवे।
नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः पितर् देहि नमस्ते पितर् देष्म।
एतत्ते पितर् वासः।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) एषु श्राद्ध पिण्डेषु एतानि वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

☐ हाथ का तिल-जल पिण्डों पर छिड़क दें, मोटक भूमि पर रख दें।

☐ चुपचाप मौन होकर पिण्डों पर क्रमशः—
चन्दन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दें।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) एषु श्राद्ध पिण्डेषु एतानि गन्धार्चन-पुष्प-धूप-ताम्बूल पूगीफलानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।।

☐ संकल्प पढ़कर हाथ का तिल-जल पिण्डों पर चढ़ा दें—मोटक भूमि पर रख दें।

☐ बची हुई खीर (बिना तिल मिली) थोड़ी-थोड़ी सभी पिण्डों के पास वेदी पर रख दें।

☐ दाहिने हाथ में जल ले-लेकर सभी पिण्डों के पास छोड़ दें। मन्त्र पढ़ें—

।। शिवा आपः सन्तु।।

☐ फूल चढ़ा दें। **।। सौमनस्य मस्तु।।**

☐ भोजन पात्र पर अक्षत छोड़ दें। **।। अक्षतं चारिष्टं चास्तु।।**

नोट— माता के श्राद्ध में भी "नमस्ते पितः" ही पढ़ना चाहिए मातः नहीं पढ़ा जाता है, क्योंकि यह मन्त्र है। मन्त्रों में परिवर्तन नहीं होता।

☐ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प पढ़ें—

अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) एषु श्राद्धेषु दत्तैतानि अन्न-पानादिकानि उपतिष्ठन्ताम्।

☐ हाथ का तिल-जल पिण्डों पर छिड़क दें।

☐ सव्य होकर नाक-कान छू लें—पूर्व की ओर मुख करके हरि का स्मरण करें।

☐ दक्षिण दिशा की ओर मुख करके—दक्षिण दिशा को देखता हुआ—(सव्य होकर ही)

☐ दाहिने हाथ में जल ले-ले कर पूर्व की ओर गिराता हुआ सभी पिण्डों पर जल धारा दे मंत्र पढ़ता रहेः—।।अघोरः पिता अस्तु।।

☐ पूर्व की ओर मुख घुमा कर—हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ओम् गोत्रं नो वर्धताम् दातारो नोऽभि वर्धन्ताम् वेदाः सन्तति रेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु।।
अन्नं च नो बहु भवेद् अतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन।
एताः सत्या आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः।।

- ☐ अपसव्य होकर—सभी पिण्डों पर से पान-सुपारी-फूल-सूत आदि पूजन-सामग्री हटा दें।
- ☐ सभी पिण्डों पर कुशा का ३-३ टुकड़ा रख दें।
- ☐ क्रमशः १-१ दोनिया में दूध मिला जल ले—लेकर दक्षिण की ओर धार गिराते हुए क्रमशः १-१ पिण्डा पर जल-दुग्ध धारा दें—देते समय निम्न मन्त्र पढ़ता रहें—

ओम् ऊर्जम् वहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिश्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितरम्।।

- ☐ थोडा झुककर सभी पिण्डों को सूँघ लें। पिण्डों को वेदी से उठा कर अलग रख दें। अथवा १-१ पिण्ड उठा-उठा कर सूँघ कर अलग किनारे रखता जाय।
- ☐ वेदी पर बिछे हुए सभी कुशों को उठाकर अग्नि में डाल दें।
- ☐ अर्घ पात्र (दोनिया) जो आसन मोटक के पीछे उलट कर रखा है। उन सभी को सीधा कर दें—उनमें तिल छिड़क दें।

।। नौकादान।।

[यदि ''वैतरणी'' विधि करनी है, तो ''नौकादान'' बाद में होगा।

- ☐ सव्य होकर—आचमन करें—गायत्री का जप कर लें।
- ☐ ऊख की नौका के ऊपर कपास तथा १ ताँबे की कटोरी में तिल रखें।
- ☐ ब्राह्मण तथा नौका पर जल-गन्ध-फूल छोड़ दें।

।। इक्षुमयी नौकायै नमः।। देय ब्राह्मणाय ते नमः।।

।।अद्य इमां इक्षुमयी नौकां ते ददानि।।

- ☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे कहे—।।अद्य इमां इक्षुमयी नौकां ते ददानि।।
- ☐ ब्राह्मण कहे—।।ददस्व।।
- ☐ नौका तथा ब्राह्मण पर फिर जल छिड़क दें। कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) इमाम् इक्षुमयी नौकां प्रेतत्व विमुक्तिकामनया यममार्गे वैतरणी उतारणार्थम् इमाम् इक्षुमयी नौकां सकार्पासां तिल पात्र सहितां च यज्ञपुरुष दैवताम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

- ☐ ब्राह्मण को संकल्प देकर नौका स्पर्श करा दें। ब्राह्मण नौका छूकर कहे ।। स्वस्ति।।
- ☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दें।

।। अद्य कृतैतत् इक्षुमयी नौकादान सांगता सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

- ☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

टिप्पणी—कुछ लोग सव्य से अक्षत लेकर कुछ लोग अपसव्य से तिल लेकर नौकादान आदि लिखते हैं।

।। सान्नोदक कुम्भदान।।

☐ १ मिट्टी का घड़ा जल भर कर अपने सामने रखें। अपसव्य हो जाय, दक्षिण मुख करें।

☐ एक सीधा (आटा-चावल-दाल आदि) घड़ा के पास रख लें।

[इस घड़ा तथा सीधा को ही सान्नोदक कुम्भ कहते हैं]

☐ घड़ा तथा सीधा पर जल-गन्ध-तिलाक्षत-फूल आदि चढ़ा दें।

☐ ब्राह्मण पर भी गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दें।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दें कहे— ।। अद्य इदं सान्नोदक कुम्भं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।।ददस्व।।

☐ ब्राह्मण तथा सीधा-घड़ा पर फिर जल छिड़क दें।

☐ कुश-तिल-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) प्रेतत्व विमुक्तिकामनया यम मार्गे गाढ़ तृष्णा-तृषा-निवारणार्थम् इदं सान्नोदकं कुम्भं सोपस्कर सहितं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ संकल्प कर ब्राह्मण को दे दें। ब्राह्मण लेकर कहें ।।स्वस्ति।।

☐ फिर मोटक-तिल-जल-द्रव्य लेकर सांगता दें।

।। अद्य कृतैतत् सान्नोदक कुम्भदान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दें। ब्राह्मण लेकर कहें ।।स्वस्ति।।

☐ हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

।। गन्धोदक तिलैर्मिश्रं सान्नं कुम्भं समन्वितम्।
पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि ह्यक्षय्य मुपतिष्ठताम्।।

।।वर्षाशनदान।।

[वर्ष भर के लिए जो अन्न दिया जाता है उसे वर्षाशन कहते हैं]

☐ वर्षाशन तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दें।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दें कहें— ।।अद्य इदं वर्षाशनं ते ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहें ।।ददस्व।।

☐ फिर ब्राह्मण तथा वर्षाशन पर जल छिड़क दें।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः

प्रेतायाः) प्रेतत्व विमुक्ति कामनया प्रेताद्यारभ्यमाण एतावत् दिन पर्यन्त दशदिवस न्यून संवत्सर भोग्यान्नम् इदं वर्षाशनं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को संकल्प दे दें। ब्राह्मण लेकर कहें ।। स्वस्ति।।

☐ फिर मोटक-तिल-जल-द्रव्य लेकर सांगता दें।

।। अद्य कृतैतत् वर्षाशन दान प्रतिष्ठार्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दें। ब्राह्मण लेकर कहे ।।स्वस्ति।।

।। दक्षिणादान।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर ब्राह्मण को श्राद्ध की दक्षिणा दें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्ग प्राप्ति कामनया च कृतैतेषां श्राद्धानां प्रतिष्ठार्थम् इदं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को दक्षिणा दे दें। ब्राह्मण लेकर कहें ।। स्वस्ति।।

।। ब्राह्मण भोजन संकल्प।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें:—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) प्रेतत्व विमुक्ति कामनया अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया अस्मिन् श्राद्ध दिवसे यथान्नेन यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् (एकं ब्राह्मणम्) भोजयिष्ये। दक्षिणां ताम्बूलं च दास्ये।।

☐ संकल्प पढ़कर मोटक-तिल-जल सामने भूमि पर छोड़ दें।

☐ हाथ में जल-तिल-चावल लेकर दीपक बुझा दें। सव्य हो जाय। आचमन कर लें।

☐ पूर्व की ओर मुख करके गायत्री जप कर लें। प्रार्थना करें।

प्रमादात् कुर्वताम् कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। विष्णवे नमः।।

☐ पान-सुपारी-दक्षिणा ब्राह्मण उठा लें, कुशा को छोड़कर शेष प्रयुक्त सामग्री, जैसे—

- ☐ वेदी की मिट्टी दोनिया-पत्तल-पिण्डा-खीर-तिल-जवा-फूल आदि जो पिण्डा पर चढ़ा था। उपयोग में आ चुका है—सब बटोर कर नदी-तालाब में अथवा बाग-बगीचे में एक किनारे फेंक दें।
- ☐ कुशा को बटोर कर एक किनारे कहीं अलग फेंक दें। श्राद्ध स्थान को लीप कर स्वच्छ-शुद्ध कर दें।
- ☐ यदि सपिण्डन भी इसी दिन करना है, तो ब्राह्मण भोजन तथा सुफल बाद में होगा।
- ☐ सपिण्डन इस दिन नहीं करना है तो ब्राह्मण भोजन करा दें। ब्राह्मण को पान दक्षिणा दें। शय्या पर बिठाकर पांव दाबें, आशीर्वाद सुफल लेना चाहिए।

।। सपिण्डन श्राद्ध।।

- ☐ सपिण्डन श्राद्ध में पिण्ड के लिए दो जगह अलग-अलग खीर पकाई जाती है।
- ☐ १ छोटी हाँडी में लगभग १ बेल के समान पिण्ड के लिए खीर प्रेत के निमित्त पकाएँ।
- ☐ दूसरी खीर बड़ी हाँडी में बेल के समान ५ पिण्ड तैयार हो—इस अनुमान से पितरों के लिए पकाएँ।
- ☐ गोबर के कंडे में तथा मिट्टी के पात्र में खीर पकाई जाती है।
- ☐ लोहे के पात्र में खीर नहीं पकानी चाहिए और लोहे की कलछुल से चलाना भी नहीं चाहिए।
- ☐ खीर चलाने के लिए १ लकड़ी या सरकंडा जैसी कोई पवित्र वस्तु का प्रयोग करना चाहिए।
- ☐ मृत प्रेत का श्राद्ध तथा पितरों का श्राद्ध अलग-अलग होता है। इसलिए दोनों के बीच १ हाथ की दूरी रहनी चाहिए।
- ☐ सुविधा के लिए दोनों के बीच में १ रेखा (लाइन) खींच देनी चाहिए।
- ☐ प्रेत की खीर या अन्य प्रेत श्राद्ध सामग्री या प्रेत-श्राद्ध स्थल के स्पर्श के बाद जब पितरों की ओर आना हो अथवा पितरों वाली खीर या अन्य कोई वस्तु स्पर्श करनी पड़े तो हाथ-पाँव धोकर ही करना चाहिए।

☐ मृत प्रेत तथा पितरों के लिए अलग-अलग २ जल पात्र भी रखना चाहिए।

☐ मोटक-पैंती भी अलग-अलग रखें। जिस ओर जाएँ—उस ओर की पैंती पहन लें और उधर का कुश मोटक इस्तमाल करें।

☐ श्राद्ध की पूजन-सामग्री भी प्रेत के लिए अलग तथा पितर-विश्वेदेवा के लिए अलग दो जगह रखें।

☐ पितरों की पूजन सामग्री से ''विश्वेदेवा'' की पूजा होती है।

☐ श्राद्धकर्त्ता दक्षिण दिशा की ओर मुख करके पिण्डदान करेगा। अतः दक्षिण की ओर पितरों की वेदी बनाएँ।

☐ पितर वेदी के पश्चिम विश्वेदेवा का आसन रखना चाहिए।

☐ पितर वेदी के पूर्व बाईं ओर १ लाइन खींचकर लाइन के पार प्रेत की वेदी बनाएँ।

☐ प्रेतवेदी १ बीता लम्बी-चौड़ी दक्षिण की ओर नीची जिससे जल दक्षिण की ओर ही बहे—इस ढंग से बनाएँ। प्रेत वेदी के आगे दक्षिण की ओर ३ पत्ता जोड़कर १ आसन रखें।

☐ पितरों के लिए ३ वेदी उत्तर से दक्षिण के क्रम में अर्थात् अपने सामने से आगे की ओर ढालदार बनाएँ।

टिप्पणी—प्रेत मंजरी के 'पूर्वस्था' प्रेत पिण्ड वेदीं प्रकल्य तत्पश्चिमे पितरस्तत् पश्चिमे विश्वेदेवा इति स्थानं प्रकल्पयेत्' के अनुसार इस पद्धति में प्रेत वेदी लिखी गई।

☐ पितरों के लिए ३-३ पत्ता जोड़कर ३ आसन वेदी के दक्षिण दिशा में बगल-बगल (पूर्व से पश्चिम के क्रम में) रखें।

☐ विश्वेदेवा के लिए ३ पत्ता जोड़कर १ आसन पूर्वाग्र रखें।

☐ प्रेत-पितर-विश्वेदेवा सभी के आसन के सामने आसन से मिलाकर १-१ पत्ता भोजन पात्र के निमित्त रखे दें। सभी भोजन पात्र पर १-१ मिट्टी का प्याला अर्घपात्र के लिए रख दें।

☐ प्रेत तथा पितर स्थल के बीच में जो रेखा लाइन दोनों जगहों को बाँटने के लिए खींची है। उस रेखा पर ३ प्याला उत्तर से दक्षिण के क्रम में रख दें, यह प्याला प्रेत-पितर के अर्घजल मेलन में काम आता है।

☐ १ मिट्टी के प्याले में १ बाती का (तिल या सरसों के तेल का) दिया जलाकर दक्षिण मुख रख दें। श्राद्ध समाप्त होने तक बुझे नहीं प्रबन्ध कर दें।

।। श्राद्ध प्रारम्भ ।।

☐ पहले पितृस्थल की ओर आसन पर बैठकर पूर्व की ओर मुख घुमाकर—

☐ अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर त्रिकुश से जल छिड़कें—

।।अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

☐ ३ बार आचमन करें।

नारायणाय नमः। केशवाय नमः। माधवाय नमः।
हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

☐ हाथ धो लें -

☐ दोनों हाथ की अनामिका अंगुली में पैती पहनें।
(बाएँ हाथ में ३ कुशा की दाएँ हाथ में २ कुशा की पवित्री पहननी चाहिए।)

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच्
छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्यते पवित्रपते पवित्रपूतस्य
यत् कामः पुने तच्छकेयम्।।

☐ बाएँ हाथ में सरसों लेकर दाहिने हाथ से ढँककर निम्न मन्त्र पढ़ें—

।।नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः।।

☐ दाहिने हाथ से ४-४ दाना सरसों सभी दिशाओं में छिड़के-मन्त्र पढ़ता रहे—

पूर्व में	—प्राच्यै नमः।	दक्षिण में	—अवाच्यै नमः।
पश्चिम में	—प्रतीच्यै नमः।	उत्तर में	—उदीच्यै नमः।
ऊपर आकाश में	—अन्तरिक्षाय नमः।	नीचे भूमि में	—भूम्यै नमः।

☐ पढ़कर हाथ का सब सरसों सामने भूमि पर छोड़ दें।

☐ अपने सामने भूमि पर ३ बार जल छोड़ दें—चंदन-अक्षत-पुष्प छोड़कर पूजा कर दें—
पूजन वाक्य पढ़ता रहे—।।श्राद्धभूम्यै नमः।। इसी वाक्य से गन्धाक्षत-पुष्प चढ़ा दें।

☐ १ कुशा २ दाना तिल लेकर दाहिनी ओर कमर में (धोती के टेट में) खोस लें—

१. निहन्मि सर्वम् यदा मेध्य कृद् भवेत् हताश्च सर्वेऽसुर दानवा मया।
रक्षांसि यक्षांसि पिशाच गुह्यका हतामया यातुधानाश्च सर्वे।।

२. सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मा सि शर्म यजमानस्येन्द्रस्व।
योनिरसि सुसस्याः कृषी स्कृधि।।

☐ त्रिकुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें—

पिता के लिए— ।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक प्राप्ति कामनया तथा च अमुक गोत्राणां पितामह—प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानां यथानाम धेयानां पितामहादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिकाल काम विश्वेदेव पूर्वकाणां सपिण्डीकरण श्राद्धमहं करिष्ये।।

१. सधवा माता के लिए- ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामहीनां पितामह्यादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिकाल काम विश्वेदेव पूर्णकाणां सपिण्डीकरण श्राद्धमहं करिष्ये।।

२. विधवा माता के लिए—।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया पितृ-पितामह-प्रपितामहानां यथानाम धेयानां पित्रादि त्रय श्राद्ध सम्बन्धिकाल काम विश्वेदेव पूर्वकाणां सपिण्डीकरण श्राद्धमहं करिष्ये।।

☐ हाथ का कुश-जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दें।

☐ दाहिने हाथ से अपना नाक-कान छू लें। गायत्री जप लें।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

☐ पश्चिम की ओर मुख कर लें। विश्वेदेवा का पूजन करें।

☐ त्रिकुश-जवा-जल तथा १ कुशा गाँठ लगाकर (विश्वेदेवा के आसन हेतु) दाहिने हाथ में लेकर संकल्प करें।

पिता— ।। अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक अमुक गोत्राणां पितामह - प्रपितामह-वृद्ध

प्रपितामहानां यथानामधेयानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः।।

सधवा माता— ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक अमुक गोत्राणां पितामही—प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः।।

विधवा माता हेतु— ।। अद्य मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां यथानामधेयानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः।।

☐ आसन का कुशा विश्वेदेव के लिए रखे तिसा (पत्ते का आसन) पर पूर्वाग्र रख दें।

☐ हाथ का जव-जल उसी पर चढ़ा दें। संकल्प का त्रिकुश भूमि पर रख दें।

☐ हाथ में जवा लेकर आवाहन करें—निम्न मन्त्र पढ़ें—

।। विश्वेदेवा स आगत श्रृणुताम इम ऀ हवम्। एदम्बर्हिनिषीदत। विश्वान्-देवान्-अहम्-आवाहयिष्ये।।

☐ हाथ का जवा विश्वेदेव पर चढ़ा दें, निम्न मन्त्र पढ़ें—

।। यवोसि यव यास्म द्वेषो यवयारातीः।।

☐ हाथ जोड़कर विश्वदेव की प्रार्थना करें—

१. विश्वेदेवाः श्रृणुते म ऀ हवम्मे ये अन्तरिक्षे य उप द्य विष्ठ।
ये अग्नि जिह्वा उतवा यजत्रा आसद्यास्मिन् वर्हिषि मादयध्वम्।।

२. आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये चात्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते।।

☐ अर्घपात्र के प्याले पर १ कुशा का टुकड़ा गाँठ लगाकर पूर्वाग्र रखें—मन्त्र पढ़ें—

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

☐ पियाले में जल तथा जवा रख दे।

टिप्पणी— अधिकतर पद्धतियों में उत्तर मुख बैठकर विश्वेदेवा को पाद्य अर्घ आदि देने का उल्लेख मिलता है। किन्तु धर्म सिन्धु पीयूषधारा पाद्यविवेचन प्रकरण में भविष्य पुराण के वचन का उद्धरण देकर उदङ्मुखः प्रत्यङ्मुखो वा उत्तर या पश्चिम किसी दिशा में मुख रखा जा सकता है। व्याघ्रपादस्मृति ने भी पश्चिम मुख कर देव पूजन करने का निर्देश दिया है।

।। शन्नोदेवी रभिष्टयआपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः।।

।। यवोसि यव यास्म द्वेषो यव या रातीः।।

☐ चुपचाप अर्घपात्र में चन्दन-फूल छोड़ दें। अर्घपात्र को दाहिने हाथ से उठाकर बाएँ हाथ में रखें।

☐ प्याले में रखे हुए गाँठ लगे कुश पवित्री को प्याले से निकालकर भोजनपात्र (पत्ता) पर रख दें।

☐ त्रिकुश से बोर कर पूजा के लोटा का जल इस कुश पवित्री पर छिड़क दें।

☐ दाहिने हाथ से प्याले को ढँक लें—मन्त्र पढ़ें—

या दिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास् तान आपः शिवाः श ऀ स्योना सुहवा भवन्तु।।

☐ त्रिकुश-जवा-जल तथा अर्घपात्र पियाला दाहिने हाथ में लेकर संकल्प पढ़ें—

१. पिता हेतु— ।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानाम् यथानामधेयानाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः।।

२. सधवा माता के लिए— ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः।।

३. विधवा माता के लिए— ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः।।

☐ संकल्प करके प्याले का जल २ बूँद भोजन पात्र पर रखे कुशपवित्री पर चढ़ाकर शेष जल आसन (कुश) पर चढ़ा दें। भोजन पात्र पर रखे कुश टुकड़े को उठाकर प्याला में रख लें।

☐ प्याला आसन के पीछे दाहिनी ओर सीधा ही रख दें—मन्त्र पढ़ें—

।। विश्वे देवेभ्यः स्थानमसि।।

☐ इस प्याले को श्राद्ध के अन्त तक हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

☐ विश्वेदेव (कुश) पर चंदन-जव-फूल-धूप-दीप-कच्चासूत-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन करें।

☐ कुशा-जवा-जल लेकर संकल्प पढ़ें—

पिता हेतु— ।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि वो नमः।।

सधवा माता के लिए— ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि वो नमः।।

विधवा माता के लिए— ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि वो नमः।।

☐ हाथ का जवा-जल विश्वेदेव आसन पर चढ़ा दें। त्रिकुश भूमि पर रख दें।

☐ दाहिने हाथ में जल लेकर विश्वेदेव के आसन-भोजन पात्र आदि सबके चारों ओर दाएं से घुमाता हुआ सामने भूमि पर छोड़ दें—मन्त्र पढ़ता रहे—

।। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

☐ अपसव्य होकर दक्षिण की ओर मुख करके १ दोनिया में १ चम्मच खीर (पितर खीर से), दो दाना तिल, १ बूँद घी-शहद-जल लें।

☐ मोटक-तिल-जल तथा दोनिया हाथ में लेकर मन्त्र पढ़ें—

।। इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः।।

☐ यह वाक्य पढ़ता हुआ दोनिया खीर-जल सहित विश्वेदेव आसन की बायीं ओर कोने में सीधी ही रख दें।

☐ हाथ का तिल-जल उसी दोनिया पर छोड़ दें। मोटक भूमि पर रख दें।

☐ सव्य होकर—नाक-कान छूकर—विश्वेदेव के भोजन पात्र पर (आसन के आगे रखे पत्ते पर) आधा चम्मच खीर-२ बूँद घी और १ दोनिया में जल रख दें। खीर पर शहद लगा दें।

☐ दोनों हाथ के अँगूठे में शहद लगाकर—सीधा हाथ (हथेली ऊपर की ओर रहे) विश्वेदेव की ओर करें—निम्न मन्त्र पढ़ें—

।। मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। मधु-मधु-मधु।

☐ दोनों हाथ से (बाएँ हाथ पर दाहिना हाथ रखकर) भोजन पात्र (जिस पर घी-खीर-जल रखा है) छू लें—मन्त्र पढ़ें—

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौ रपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।

(३) कृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम्।।

☐ बाएँ हाथ से भोजन पात्र को स्पर्श किये रहे—दाहिने हाथ के अंगूठे से भोजन पात्र पर रखे घी-खीर-जल को क्रमशः ३-३ बार कुश आसन में छुवा दे—

खीर—	इदमन्नम् ।	इदमन्नम् ।	इदमन्नम्।
घी—	इदमाज्यम् ।	इदमाज्यम् ।	इदमाज्यम्।
दोनिया का जल—	इमा आपः ।	इमा आपः ।	इमा आपः।
फिर खीर—	इदं हविः ।	इदं हविः ।	इदं हविः।

☐ भोजन पात्र पर ४ दाना जवा छोड़ दे—मन्त्र पढ़े—

।।यवोसि यव यास्म द्वेषो यव या रातीः।।

☐ त्रिकुश-जवा-जल—लेकर संकल्प पढ़े—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतद्-अन्नं सोपकरणं वो नमः।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतदन्नं सोपकरणं वो नमः।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतदन्नं सोपकरणं वो नमः।।

☐ हाथ का जवा-जल विश्वेदेव पर चढ़ा दे। त्रिकुश सामने भूमि पर रख दे।

☐ हाथ जोड़ ले—विश्वेदेव का पूजनकार्य समाप्त करे।

प्रेत कार्य प्रारम्भ

- ☐ विश्वेदेव का कार्य समाप्त कर उधर की पैंती उतार कर प्रेत श्राद्ध वेदी के पास आकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठे।
- ☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा पहन कर अपसव्य हो जाय, बायां पैर मोड़ ले।
- ☐ इस ओर की पैंती (पवित्री) दोनों हाथ में पहन ले।
- ☐ दाहिने हाथ में मोटक-तिल जल तथा १ अतिरिक्त मोटक प्रेत आसन के लिये लेकर संकल्प पढ़े—
- ☐ पिता, सधवा माता, विधवा माता सभी के लिए यही संकल्प होगा:—

।। अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) सपिण्डीकरण श्राद्धे इदम्-आसनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

- ☐ संकल्प करके आसन वाला मोटक सामने तिप्पा (आसन) पर रख दे।
- ☐ हाथ का तिल-जल उसी पर गिरा दे—मोटक भूमि पर रख दे।
- ☐ दाहिने हाथ से आसन पर तिल छिड़के—मन्त्र पढ़े—

।।अपहताअसुरा रक्षा ऽँ सिवेदिषदः।।

- ☐ हाथ जोड़कर आवाहन करे—

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन् त्वस्मान्।।

- ☐ प्रेत-आसन के सामने अर्घपात्र के पियाले में १ कुशा (बीच भाग निकाल कर) उसमें गांठ लगाकर रख दे—निम्न मन्त्र पढ़े—

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

- ☐ निम्न मन्त्र पढ़कर अर्घपात्र पियाले में जल भरे—तिल—छोड़े।

जल- शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः।
तिल- तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवो देव निर्मितः।
प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा।।

- ☐ चुपचाप गंध (चन्दन) फूल अर्घपात्र में छोड़ दे।
- ☐ बाएँ हाथ में अर्घपात्र रख कर उसमें का कुशा भोजन के पत्ता पर उत्तराग्र रख दे।
- ☐ मोटक से इस कुशा पर पूजा के जल पात्र से जल छिड़के—
- ☐ दाहिने हाथ से इस अर्घपात्र (दोनिया) को ढँक ले—मन्त्र पढ़े—

।। या दिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः श ऽऽ स्योना सुहवा भवन्तु।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे—माता-पिता सभी के लिए—

।। अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) सपिण्डीकरण
श्राद्धे एष हस्तार्घः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

☐ संकल्प के बाद पियाले का २ बूँद जल भोजन पात्र पर रखे कुशा पर तथा २ बूँद जल आसन मोटक पर चढ़ाकर शेष जल सहित पियाला जहाँ से उठाया था, उसी स्थान पर रख दे।

☐ हाथ का तिल-जल-भोजन पात्र पर चढ़ा दे।

☐ मोटक तथा दोनों हाथ में पहिनी हुयी पवित्री (पैंती) उतार कर अपने सामने भूमि पर रख दे।

☐ उठकर श्राद्ध स्थल से बाहर निकल कर हाथ-पांव धो ले। सव्य हो जाय।

पितर स्थान में बैठना

☐ पितर श्राद्ध स्थल में आकर आसन पर बैठ जाय।

☐ पूर्वमुख करके दाहिने हाथ के अँगूठे से अपना नाक-कान छू ले। भगवान का ध्यान कर लें।

☐ दूसरी पवित्री (पैंती) दोनों हाथ में पहन ले।

☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय। दक्षिण मुख कर ले।

☐ मोटक-तिल-जल तथा आसन के लिये १ दूसरा मोटक लेकर संकल्प पढ़े—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य पितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रायाः पितामह्या इदम्-आसनं ते स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रस्य पितुः इदम्-आसनं ते स्वधा।

☐ संकल्प करके आसन का मोटक पहले आसन (तिधा) पर रख दे। हाथ का तिल-जल उसी पर चढ़ा दे।

☐ फिर मोटक-तिल-जल-तथा आसन के लिये १ दूसरा मोटक लेकर प्रपितामह को आसन संकल्प करे।

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य प्रपितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रायाः प्रपितामह्या इदम्-आसनं ते स्वधा।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य पितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा।

- ☐ आसन मोटक-दूसरे तिप्ता पर रख दे—हाथ का तिल-जल चढ़ा दे।
- ☐ फिर मोटक-तिल लेकर तथा आसन के लिये १ मोटक लेकर वृद्ध प्रपितामह को आसन संकल्प करे—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य प्रपितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा।

टिप्पणी— पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामह का आसन पश्चिम से पूर्व की ओर होता है। इसी क्रम से मोटक रखना चाहिए।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रायाः वृद्ध-प्रपितामह्या इदम्-आसनं ते स्वधा।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य प्रपितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा।

- ☐ आसन-मोटक-तीसरे तिप्ता पर रख दे। हाथ का तिल-जल उसी पर चढ़ा दे।
- ☐ संकल्प का मोटक भूमि पर रख दे।
- ☐ दाहिने हाथ में तिल लेकर पितरों का आवाहन करे—

(१) पितॄन् आवाहयिष्ये।

(२) उशन्तस्त्वा निधी मह्यु शन्तः समिधी महि। उशन्नुशत आवह पितॄन् हविषे अत्तवे।।

- ☐ हाथ का तिल तीनों आसन पर छिड़क दे—मन्त्र पढ़े—

।।अपहताअसुरा रक्षा ऽ सिवेदिषदः।।

- ☐ तीनों आसन के आगे रखे तीनों अर्घपात्रों (पियाला) में १-१ पवित्री कुशा का बीच भाग निकाल कर—

☐ उसमें १ गांठ लगाकर दक्षिणाग्र रख दे। मन्त्र पढ़े—

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

☐ तीनों अर्घपात्र में जल-तिल छोड़ दे—मन्त्र पढ़े—

जल- शन्नोदेवी रभिष्टयआणे भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्त्रवन्तु नः।

तिल- तिलोऽसि सोम देवत्यो गोसवो देव निर्मितः।

प्रत्नमद्भि प्रत्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।।

☐ चुपचाप अर्घपात्र में चंदन-फूल छोड़ दे—

☐ क्रमशः पहला पियाला दाहिने हाथ से उठा कर बाएँ हाथ में रख ले

☐ दाहिने हाथ से पियाले में रखी पवित्री को निकाल कर उत्तराग्र भोजन पात्र पर रखें।

☐ पियाला बाएँ हाथ में लिये रहे।

☐ दाहिने हाथ से पूजा के लोटे से मोटक द्वारा पवित्री पर जल छिड़क दे।

☐ जल छिड़क कर दाहिने हाथ से अर्घपात्र को ढँक ले—मन्त्र पढ़े—

यादिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आप शिवाः श ७ स्योना सुहवा भवन्तु।।

☐ इसके बाद दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम् गोत्रस्य-प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामही एष हस्तार्घः ते स्वधा।

विधवा माता पक्षे— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितः एष हस्तार्घः ते स्वधा।।

☐ हाथ का जल-तिल अर्घपात्र पर छोड़ दे। मोटक सामने भूमि पर रख दे।

☐ अर्घपात्र दाहिने हाथ में लेकर २ बूंद जल पवित्री पर तथा २ बूंद जल आसन मोटक पर चढ़ा दे।

☐ शेष जल सहित अर्घपात्र यथास्थान भोजन पात्र के सामने रख दे।

☐ दूसरा—अर्घपात्र पियाला दाहिने हाथ से उठाकर बाएँ हाथ में रखे।

☐ पियाले में रखी पवित्री निकाल कर आसन पर रखे।

☐ पूजा के लोटा से पवित्री पर जल छिड़के। अर्घपात्र दाहिने हाथ से ढक ले, मन्त्र पढ़े—

यादिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उतपार्थिवीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः श ७ स्योना सुहवा भवन्तु।।

इसके बाद - मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़ें :-

पिता हेतु – अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य
प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे
अमुकगोत्र अमुक नाम प्रपितामह एष
हस्तार्घस्ते स्वधा।

सधवा माता हेतु – अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः
सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र
प्रपितामही एष हस्तार्घः ते स्वधा

विधवा माता हेतु – अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः
सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र
पितामह एष हस्तार्घस्ते स्वधा।।

☐ हाथ का तिल-जल अर्घपात्र पर छोड़ दे। मोटक भूमि पर रख दे।

☐ अर्घपात्र दाहिने हाथ में लेकर २ बूंद जल पवित्री पर तथा २ बूंद जल आसन मोटक पर चढ़ा दे।

☐ शेष जल सहित अर्घपात्र यथास्थान रख दे।

☐ तीसरा पियाला [अर्घपात्र] दाहिने हाथ से उठाकर बाएं हाथ में रख ले।

☐ पियाले में रखी पवित्री निकालकर आसन पर रख दे

☐ पूजा के लोटा से मोटक द्वारा पवित्री पर जल छिड़क दे

☐ अर्घपात्र [पियाला] दाहिने हाथ से ढंक ले

☐ मंत्र पढ़े –

या दिव्या आपः पयसा सं वभूवुर्या अन्तरिक्षा उत् पार्थिवीर्याः।
हिरण्य वर्णा यज्ञियास्तान आप शिवाः शꣳ स्योना सुहवा भवन्तु।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे—

पिताहेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र वृद्ध-प्रपितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रे वृद्धप्रपितामही एष हस्तार्घः ते स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र! प्रपितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा।।

☐ २ बूंद जल पवित्री पर २ बूँद जल मोटक-आसन पर चढ़ा दे। शेष जल सहित पियाला उसी आसन के समीप यथास्थान रख दे।

☐ जनेऊ अंगोछा सीधा कर नाक-कान छूकर—भगवान का ध्यान करे।

☐ पैंती उतार कर भूमि पर रख दे।

प्रेत स्थल में आना—

☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो प्रेत स्थल में आकर यहाँ की पैंती पहने।

☐ प्रेत के अर्घपात्र को उठाकर इस पियाला का जल रेखा के ऊपर जो ३ पियाला रखा है, उन तीनों में बराबर-बराबर बाँट कर गिरा दे।

☐ जल बाँटने के बाद प्रेत का अर्घपात्र (पियाला) उसी रेखा पर (अपनी ओर) उत्तर की ओर रख दे।

☐ दोनों हाथ की पैंती उतार कर भूमि पर रख दे। श्राद्ध स्थल से बाहर निकल कर हाथ पांव धो ले।

पितर स्थल में आना—

☐ पितर स्थल में आकर अपने आसन पर बैठे। यहां की पैंती पहने।

☐ रेखा पर रखा हुआ तीन पियाला का पहला १ पियाला जल सहित उठा ले।

☐ उसका जल प्रेत के अर्घपात्र (पियाला) में फिर उड़ेल दे।

☐ खाली पियाला जहाँ से उठाया है, वहीं रख दे।

☐ मोटक आसन के सामने रखे हुए पहले (पितामह के अर्घपात्र) पियाले को उठाकर अपने बाएँ हाथ में ले।

☐ दाहिने हाथ से (रेखा पर रखे) प्रेत के अर्घपात्र (पियाले) को (जो १ हिस्सा जल उड़ेल लिया है) जल सहित उठा ले, और बाएँ हाथ में रखे पितामह के जल में (पियाले) इस प्रेत पियाले के जल को उड़ेल दे।

मन्त्र पढ़े—

(१) ये समानाः समनसः पितरो यम राज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।।

(२) ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां ॐ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन् लोके शत ॐ समाः।।

- ☐ पितामह के पियाले को जहाँ से उठाया है, वहीं रख दे।
- ☐ प्रेत का खाली पियाला रेखा पर फिर रख दे।
- ☐ फिर रेखा पर एक दूसरे पियाले को जल सहित उठा कर उसका जल प्रेत के अर्घपात्र (पियाला) में उड़ेल ले।
- ☐ खाली पियाला यथास्थान रख दे।
- ☐ प्रपितामह के अर्घपात्र पियाला को उठाकर बाएँ हाथ में रखे।

पिता पक्ष में— पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामह के अर्घपात्र अथवा पिण्ड का जहाँ उल्लेख हो उसे संकेत वाचक समझ कर कार्य करे।

सधवा माता पक्ष में— पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामही—जाने।

विधवा माता पक्ष में— पिता-पितामह-प्रपितामह—समझना चाहिए।

- ☐ दाहिने हाथ से रेखा पर रखे प्रेत पियाला जल को उठाकर बाएँ हाथ में रखे प्रपितामह के अर्घपात्र (पियाले) के जल में मिला दे। निम्न मन्त्र पढ़ता रहे—

(१) ये समानाः समनसः पितरो यम राज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।।

(२) ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां ॐ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन् लोके शत ॐ समाः।।

- ☐ प्रपितामह के पियाले को अपने स्थान पर रख दे। प्रेत का खाली पियाला भी यथास्थान रख दे।
- ☐ फिर रेखा पर के तीसरे पियाले को जल सहित उठाकर उसका जल उसी प्रेत के अर्घपात्र पियाले में उड़ेल ले। खाली पियाला यथास्थान रख दे।
- ☐ वृद्ध प्रपितामह के अर्घपात्र (पियाला) को उठाकर बाएँ हाथ में रखे।
- ☐ दाहिने हाथ से प्रेत के पियाले के जल को बाएँ हाथ में रखे वृद्ध प्रपितामह के अर्घपात्र के जल में मिला दे—निम्न मन्त्र पढ़ता रहे—

(१) ये समानाः समनसः पितरो यम राज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्।।

(२) ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां ँ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन् लोके शत ँ समाः।।

☐ वृद्ध प्रपितामह के पियाले को यथा स्थान रख दे। प्रेत का खाली पियाला यथास्थान रख दे।

☐ पैंती उतार कर वहीं रख दे। प्रेत स्थल में जाय—वहाँ की पवित्री पहने

☐ प्रेत का अर्घपात्र (जो रेखा पर रखा है) उठाकर प्रेत आसन के बायीं ओर उलट कर रख दे—
मन्त्र पढ़े—।।पित्रे स्थानमसि।।
(इस पियाले को श्राद्ध के अंत तक हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए)

☐ पैंती उतार कर वहीं रख दे : श्राद्धस्थल से बाहर आकर हाथ पांव धो ले।

☐ फिर पितर स्थल में आ जाय। आसन पर बैठकर यहाँ की पैंती पहन ले।

☐ पितरों के तीन पियाले (अर्घपात्र) जल सहित रखे हैं। इनमें से तीसरा वृद्ध प्रपितामह को पियाले का जल पवित्री पुष्प-आदि के सहित दूसरे प्रपितामह के पियाले में उड़ेल दे।

☐ खाली पियाला प्रपितामह के पियाले के नीचे रख ले।

☐ फिर इन दोनों पियालों को उठाकर इसका जल पवित्री-पुष्प सहित पहले पितामह के पियाले में उड़ेल दे। और खाली दोनों पियाला पितामह के पियाले के नीचे रख ले।

☐ तीनों पियाला पितामह के आसन की बायीं ओर पलट कर रख दे। मन्त्र पढ़े—
।।पितामहादिभ्यः स्थानमसि।।

☐ इन पियालों को श्राद्ध के अन्त तक हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

☐ दोनों हाथ की पैंती उतार कर पितर स्थल में रख दे। प्रेत स्थल में आकर यहाँ की पैंती पहन ले।

☐ चुपचाप प्रेत-आसन (मोटक पर) चंदन, तिल-फूल, धूप-दीप, नैवेद्य, पान-सुपारी-दक्षिणा-कच्चा सूत—चढ़ा दे। मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-पूगीफल-वांसासि ते मया दीयन्ते-तवोपतिष्ठन्ताम्।।

☐ हाथ का तिल-जल-प्रेत के आसन पर गिरा दे। मोटक भूमि पर रख दे।

☐ दाहिने हाथ में जल लेकर प्रेत के आसन-भोजन-पात्र आदि के चारों ओर वामावर्त घुमाकर सामने भूमि पर जल छोड़ दे—मन्त्र पढ़ता रहे—

।।यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

☐ दोनों हाथ की पैंती उतार कर वहीं भूमि पर रख दे।

☐ बाहर आकर हाथ पांव धो ले। पितर स्थल से आकर अपने आसन पर बैठे।

- ☐ यहाँ की पैंती पहन ले।
- ☐ चुपचाप तीनों आसन मोटक पर चंदन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-पान-सुपारी-दक्षिणा-कच्चा सूत—चढ़ाकर पितरों की पूजा करे।
- ☐ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करे—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहाः एतानि गन्धादीनि तेभ्यः स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामह्यः एतानि गंधादीनि तेभ्यः स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः एतानि गंधादीनि तेभ्यः स्वधा।।

- ☐ हाथ का तिल-जल-तीनों मोटक-आसन पर चढ़ा दे। मोटक भूमि पर रख दे।

- ☐ दाहिने हाथ में जल लेकर तीनों आसन-भोजन पात्र आदि के चारों ओर वामावर्त घुमाकर मण्डल कर दे। मन्त्र पढ़े—

।।यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

- ☐ जनेऊ-अंगोछा सीधा कर सव्य हो जाय—पूर्व की ओर मुख करके अपना नाक-कान छू ले, भगवान का ध्यान करे।
- ☐ एक दोनिया में थोड़ा-सा जल भर कर अग्नि कोण में (पितर आसन की बायीं ओर वेदी के पास) रख दे।
- ☐ पितरो की खीर से आधा चम्मच के अन्दाज खीर लेकर इसी दोनिया में दो बार छोड़ दे—मन्त्र पढ़े—

(१) अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा। (२) सोमाय पितृमते स्वाहा।

- ☐ पैंती उतार कर भूमि पर रख दे।
- ☐ प्रेत स्थल में जाकर अपने आसन पर बैठे—वहाँ की पैंती पहने। अपसव्य हो जाय।
- ☐ प्रेत के पिण्ड हेतु निर्मित खीर लगभग आधा चम्मच लेकर
- ☐ प्रेत के आसन के पास भोजन पात्र (पत्ता) पर रखे। भोजन पात्र पर २ बूंद घी तथा २ बूंद शहद रख दे।

☐ १ दोनिया में जल भर कर रख दे। खीर पर १ बूँद शहद लगा दे।

☐ दोनों हाथ के अंगूठे में शहद लगाकर भोजन पात्र को ढंक ले—मन्त्र पढ़े—

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ᳬ रजः। मधु द्यौरस्तुनः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
मधु-मधु-मधु।।

☐ दोनों हाथ को उलटा कर हथेली नीचे रहे। (दाहिने हाथ के ऊपर बांया हाथ करके—)

☐ भोजन पात्र को छू ले मन्त्र पढ़े—

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़ मस्य पा ᳬ सुरे स्वाहा।।

(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम्।।

☐ बाएँ हाथ से भोजन पात्र स्पर्श किए रहे, दाहिने हाथ के अंगूठे से ३-३ बार खीर, घी, दोनिया का जल फिर खीर छू-छू कर आसन मोटक में लगाए—मन्त्र पढ़े—

खीर—	इदमन्नम् ।	इदमन्नम् ।	इदमन्नम्।
घी—	इदमाज्यम् ।	इदमाज्यम् ।	इदमाज्यम्।

जल—	इमा आपः ।	इमा आपः ।	इमा आपः।
फिर खीर—	इदं कव्यम् ।	इदं कव्यम् ।	इदं कव्यम्।

☐ पढ़कर हाथ हटा ले। दाहिने हाथ में तिल लेकर भोजन पात्र पर छिड़क दे—

।।अपहताअसुरा रक्षा ᳬ सिवेदिषदः।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे—

अद्य अस्मत् पितः यथानाम गोत्र प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे इदमन्नं सोकरणं ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।।

☐ तिल-जल-प्रेतासन पर चढ़ा दे—मोटक भूमि पर रख दे। दोनों हाथ की पैंती उतार दे।

☐ हाथ पाव धोकर पितर स्थल में आकर अपने आसन पर बैठ जाय—यहाँ की पैंती पहन ले—

☐ सव्य होकर-नाक-कान छूकर-हरि स्मरण करे।

☐ अपसव्य होकर—इधर की खीर आधा-आधा चम्मच तीनों भोजन पात्रों पर रख दे।

☐ २-२ बूँद घी, १-१ दोनिया में जल रखे खीर पर १-१ बूँद शहद लगा दे।

☐ दोनों हाथ के अंगूठे में शहद लगा कर भोजन पात्र ढंक ले—मन्त्र पढ़े—

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ᳬ रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

मधु-मधु-मधु

☐ दोनों हाथ से दाहिने पर बांयाँ हाथ करके उलटे हाथ से तीनों भोजन पात्र स्पर्श करे—मन्त्र पढ़े—

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।

(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम्।

☐ बाएँ हाथ से भोजन पात्र (पत्ता) स्पर्श करता हुआ

☐ दाहिने हाथ के अंगूठे से ३-३ बार खीर घी, दोनिया का जल (मोटक) आसन में लगाए—मन्त्र पढ़ता रहे—

खीर—	इद मन्त्रम् ।	इद मन्त्रम् ।	इद मन्त्रम्।
घी—	इदमाज्यम् ।	इदमाज्यम् ।	इदमाज्यम्।
जल—	इमा आपः ।	इमा आपः ।	इमा आपः।
फिर खीर—	इदं कव्यम् ।	इदं कव्यम् ।	इदं कव्यम्।

☐ दाहिने हाथ से तिल लेकर तीनों भोजन पात्र पर छिड़क दे—

।।अपहता असुरा रक्षा ँ सिवे दिषदः।।

☐ मोटक तिल-जल-लेकर संकल्प करे—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहाः एतानि-अन्नानि सोपकरणानि युष्मभ्यं स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितामही-प्रपितामही-बृद्धप्रपितामह्यः देव्यः एतानि-अन्नानि-सोपकरणानि युष्मभ्यं स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितृ-पितामह-प्रपितामहाः एतानि-अन्नानि-सोपकरणानि युष्मभ्यं स्वधा।।

☐ हाथ का तिल-जल-आसन पर चढ़ा दे—मोटक भूमि पर रख दे।

☐ सव्य होकर—अपना नाक-कान छू ले, गायत्री जप ले, निम्न मन्त्र का पाठ करे—

(१) मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। मध्वीर्नः सन् त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर् मधु माँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर् गावो भवन्तु नः।।
।। मधु।। मधु।। मधु।।

(२) अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। तत् सर्वम छिद्रमस्तु।।

☐ अपने पैर के नीचे ३ कुशा रख कर निम्न मन्त्रों का पाठ करे—

(१) कृणुष्व पाजः प्रसितिन् न पृथ्वीं याहि राजे वाम वाँ इभेन।
तृष्वी मनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः।।

(२) तव भ्रमास आशु या पतन् त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः।
तपू ष्यग्ने जुह्वा पतंगान सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः।।

(३) प्रतिस्पशो विसृज तूर्णि तमो भवा पायुर् विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरे अघ श ँ सो यो अन् त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत्।।

(४) उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुषवन्य मित्राँ ओषतात् तिग्म हेते।
यो नो अराति ँ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्य तसन् न शुष्कम्।।

(५) उर्ध्वो भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष् कृणुष्व दैव्या न्यग्ने।
अव स्थिरा तनु हि यातु जूनां जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून्।।

☐ पितृ भोजन पात्र पर २ दाना तिल छिड़क कर फिर मन्त्र पाठ करे –

उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।

☐ पुरुषसूक्त का पाठ करे –

सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमि ँ सर्वतस् पृत्वा त्य
तिष्ठद्दशाङ्गुलम्। पुरुष एवेद ँ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उता मृतत्व
स्येशानो यदन्ने नाति रोहति। एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य
विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्
पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत् सा शना नशने अभि। ततो विराड जायत विराजो अधि
पुरुषः। सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः। तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतमृपषद्
आज्यम्। पशून् ताँश्चक्र वायव्यान् आरण्याग्राम्याश्चमे। तस्माद यज्ञात् सर्वहुत ऋचः
सामानि जज्ञिरे। छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद् युजस् तस्मा दजायत्। तस्मा दश्वा
अजायन्त ये के चो भयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः। तँ यज्ञम्वर्हिषि

प्रौक्षन्पुरुषज्जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रोअजायत्। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोतात्तथालोकाँ अकल्पयन्। यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत। वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् धविः। सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद् यज्ञन् तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्। यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः। आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत् साक मिन्द्रः।। नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः।। शङ्करायच मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिवतराय च।। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः।।

☐ अपसव्य होकर विकर को पिण्ड दे।

☐ अग्नि कोण में १ किनारे (जिससे कुछ छू न जाय) ३ कुशा का टुकड़ा दक्षिण की ओर अग्रभाग करके विकर आसन से निमित्त रख दे।

☐ १ दोनिया में १ पिण्डा-तिल-घी-शहद लगाकर रख ले, जल ले ले।

☐ ऊपर १ कुशा रख कर दाहिने हाथ से ढँक ले मन्त्र पढ़े—

अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्।।

☐ अपने आसन से उठ कर अग्निकोण में जो ३ कुशा (विकर आसन) रखा है, उसी पर पिण्डा सहित दोनिया उलट कर रख दे। दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दे।

☐ बाहर निकल कर हाथ-पाव धोकर सव्य हो जाय।

☐ प्रेत स्थल में आकर अपने आसन पर बैठे।

☐ अपना नाक-कान दाहिने हाथ के अंगूठे के मूल से स्पर्श करे। भगवान का ध्यान करे।

☐ इधर की पैंती पहन ले। अपसव्य हो जाय।

☐ बाएँ हाथ में एक कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से वेदी पर एक रेखा (लाइन) खींच दे—मन्त्र पढ़े—

।। अपहताअसुरा रक्षा ँ सिवे दिषदः।

- ☐ रेखा खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर दिशा में फेंक दे।
- ☐ गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर वेदी पर घुमा दे—मन्त्र पढ़ता रहे।

ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्ति अग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात्।

- ☐ घुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दे।
- ☐ मोटक से वेदी पर जल छिड़क दे—मन्त्र पढ़ता रहे—

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

- ☐ कुशा को बीच से अलग कर ३ कुश टुकड़ों को वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दे।
- ☐ दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे।
- ☐ सव्य होकर—अपना नाक-कान छू ले—हरि स्मरण करे।
- ☐ पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़े—

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

- ☐ अपसव्य होकर—दक्षिण मुख कर ले। वेदी के आगे (अपनी ओर) एक दोनिया रख दे।

- ☐ दोनिया में थोड़ा जल भर दे, तिल-चन्दन-फूल छोड़ दे।
- ☐ मोटक तिल जल लेकर—बाएँ हाथ से दोनिया को छू ले। संकल्प पढ़े—

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे प्रेतपिण्ड स्थाने अत्र अवनेनिक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

- ☐ संकल्प करके दोनिया का २ बूँद जल वेदी पर बिछे कुशा पर गिरा दे।
- ☐ शेष जल सहित दोनिया अपने स्थान पर रख दे।
- ☐ वेदी पर १ पत्ता रख दे। जिससे पिण्डा में मिट्टी-बालू आदि न लगे—(यह लोकाचार है)
- ☐ प्रेत खीर को लेकर १२ अंगुल लम्बा १ पिण्डा बना ले। थोड़ी खीर बचाए रहना चाहिए।
- ☐ पिण्डा में २ बूँद घी, २ बूँद शहद लगा दे। वायां पैर मोड़ ले।
- ☐ दाहिने हाथ में इस पिण्डा को तथा मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे—

।।अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे एष पिण्डः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

- ☐ पितृ तीर्थ से (दाहिने हाथ के तर्जनी और अंगूठे के बीच से) पिण्डा को वेदी पर रख दे।
- ☐ हाथ का तिल-जल पिण्डा पर चढ़ा दे। मोटक सामने भूमि पर रख दे।
- ☐ वेदी पर जो कुशा बिछाया है उसे छू ले।

- ☐ सव्य होकर—नाक-कान छू ले—हरि स्मरण करे।
- ☐ फिर अपसव्य होकर—बायीं ओर से (पीछे मुख घुमा कर) श्वांस (सांस) को रोके।
- ☐ पितर का ध्यान करता हुआ मुख घुमा कर सामने पिण्डा की ओर रोकी हुयी श्वांस (सांस) छोड़ दे: मन्त्र पढ़े—

।।अत्र पितर्मादयस्व यथा भाग मा वृषायस्व।
अमीमदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिष्ट।।

- ☐ अवनेजन दोनिया में जो शेष जल है। उस दोनिया को उठा कर बाएँ हाथ में रख ले।
- ☐ दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे।

।।अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

- ☐ संकल्प कर दोनिया का जल-तिल-चंदन-पुष्प पिण्डा पर चढ़ा दे।
- ☐ जल चढ़ा कर दोनिया एक किनारे अलग रख दे।
- ☐ नीवीं-धोती में (टेंट में) जो कुशा-तिल है, उसे निकाल कर दक्षिण की ओर फेंक दे।
- ☐ सव्य होकर—नाक-कान छू ले—भगवान का ध्यान करे। फिर अपसव्य हो जाय।

- ☐ बाएँ हाथ से कच्चा सूत लेकर दाहिने से पकड़ कर पिण्डा पर चढ़ा दे—मन्त्र पढ़ता रहे—

नमस्ते पितः रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय।
नमस्ते पितः स्वधाये नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर मन्यवे।
नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः पितर् देहि नमस्ते पितर् देष्म।
एतत्ते पितर् वासः।

- ☐ मोटक-तिल-जल-संकल्प करे—

।।अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र! प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्ध पिण्डे एतद् वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।।

- ☐ संकल्प पढ़कर हाथ का तिल-जल पिण्डा पर चढ़ा दे। चुपचाप पिण्डा की पूजा करे।
- ☐ चंदन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दे।
- ☐ पिण्डा बनाने से जो खीर बची है, उसे (बिना तिल लगी) पिण्डा के पास वेदी पर रख दे।
- ☐ जल छोड़ कर—पैंती उतार कर वहीं रख दे।
- ☐ श्राद्ध स्थल से बाहर आकर हाथ पाँव धो ले।
- ☐ पितर श्राद्ध स्थल में आकर अपने आसन पर बैठ जाय।

☐ इधर की दोनों पवित्री (पैंती) दोनों हाथ में पहने ले।

☐ मिट्टी लेकर उत्तर से दक्षिण की ओर (अपनी ओर से पितर आसन की ओर) १-१ बीता की ३ वेदी बनाए।

☐ बाएँ हाथ में क्रमशः १-१ कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा को पकड़े हुए कुशा के मूल (जड़) से तीनों वेदी पर १-१ रेखा (लाइन) दक्षिणाग्र खींच दे—मन्त्र पढ़ता रहे—

।।अपहता असुरा रक्षा ऀसि वेदिषदः।

☐ रेखा करके उस कुशा को अपने पीछे (उत्तर की ओर) फेंक दे।

☐ मोटक से सभी वेदी पर जल छिड़क दें—मन्त्र पढ़ता रहे—

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

☐ १ पत्ता पर अग्नि लेकर वेदी के चारों ओर घुमा दें, मन्त्र पढ़ें—

ये रूपाणि प्रति मुँचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टान् लोकान्प्रणुदात्यस्मात्।।

☐ घुमा कर अग्नि नैऋत्य कोण में एक किनारे रख दें।

☐ तीनों वेदी पर ३-३ कुशा (मूल) जड़ को निकाल कर बिछा दे।

☐ सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें—हरि स्मरण करे।

☐ पूर्व की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें—

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

☐ अपसव्य होकर—दक्षिण मुख कर ले।

☐ ३ दोनिया में जल-तिल-चंदन-फूल रख कर संकल्प करे—

☐ हाथ में मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़ें—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डस्थानेषु गोत्राः पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहाः अत्र-अवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्ड स्थानेषु गोत्राः पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामह्यः देव्यः अत्र-अवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक

श्राद्धे एषु पिण्ड स्थानेषु गोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः-
अत्र अवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।।

☐ संकल्प करके हाथ का तिल-जल तीनों दोनिया पर छिड़क दें।

☐ हाथ का मोटक भूमि पर रख दें।

☐ पहली दोनिया उठाकर २ बूँद जल पहली वेदी पर बिछे कुशा पर चढ़ा दें। दोनिया वेदी के बायीं ओर रख दें।

☐ दूसरी दोनिया का २ बूँद जल दूसरी वेदी के कुशा पर गिराकर दोनिया वेदी के बायीं ओर रख दें।

☐ तीसरी दोनिया का २ बूँद जल तीसरी वेदी के कुशा पर चढ़ाकर—दोनिया वेदी के बायीं ओर रख दें।

☐ तीनों वेदी पर १-१ पत्ता रख दें।

☐ खीर का ३ पिण्डा बना लें—१ चम्मच खीर (बिना तिल लगी) बचाए रहें।

☐ पिण्डों पर १-१ बूँद घी तथा शहद लगा दे। बायां पैर मोड़ लें।

☐ मोटक-तिल-जल तथा १ पिण्डा लेकर संकल्प करें—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामह! एष पिण्डः ते स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः यथानाम गेत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रे पितामही! एष पिण्डः ते स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र! पितः! एष पिण्डः ते स्वधा।।

☐ संकल्प करके अंगूठे के सहारे पहली वेदी पर पिण्ड रख दें, हाथ का तिल पिण्डा पर गिरा दे।

☐ दूसरा पिण्डा मोटक-तिल-जल लेकर फिर संकल्प करें।

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र प्रपितामह! एष पिण्डः ते स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रे प्रपितामही एष पिण्डः ते स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र पितामह एष पिण्डः ते स्वधा।।

☐ पिण्ड को दूसरी वेदी पर रख दें—हाथ का तिल पिण्डा पर गिरा दें।

☐ तीसरा पिण्डा-मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र वृद्धप्रपितामह एष पिण्डः ते स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रे वृद्धप्रपितामही एष पिण्डः ते स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र प्रपितामह एष पिण्डः ते स्वधा।।

- ☐ तीसरी वेदी पर पिण्डा रख दें—हाथ का तिल गिरा दें। मोटक भूमि पर रख दें।
- ☐ १ चम्मच जो खीर बची है, उसका आधा लेकर बाएँ हाथ में रखकर १ कुशा से उसे तीनों पिण्डों पर गिरा दें—मन्त्र पढ़ें—।। लेपभाग भुजस्तृप्यन्तु।।
- ☐ तीनों वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उसे छू लें।
- ☐ सव्य होकर नाक-कान छू लें—भगवान का ध्यान करें।
- ☐ अपसव्य होकर सामने (दक्षिण की ओर) देखता हुआ। पितरों का ध्यान करते हुए। पीछे उत्तर की ओर मुख करके (बायीं ओर से) श्वास रोककर सामने दक्षिण की ओर मुख करके पिण्डों पर श्वास छोड़ दें—मन्त्र पढ़ें—

(१) अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मा वृषा यद्ध्वम्।

(२) अमीमदन्त पितरो यथाभाग मा वृषायिषत्।।

- ☐ तीनों अवनेजन दोनिया (जिससे वेदी के कुशा पर २ बूँद जल गिराया है)।
- ☐ शेष जल सहित बाएँ हाथ से स्पर्श किए रहे।
- ☐ दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डेषु पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहाः अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डेषु पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामह्यः अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डेषु पितृ-पितामह-प्रपितामहाः अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा।।

- ☐ संकल्प करके हाथ का तिल-जल तीनों दोनिया में छिड़क दें।

☐ १-१ दोनिया उठाकर उसका जल-तिल-फूल आदि १-१ पिण्डा पर चढ़ा दें – दोनिया किनारे पर अलग रख दें।

(पहली दोनिया का जल पहले पिण्डा पर चढ़ाएँ)

(दूसरी दोनिया का जल दूसरे पिण्डा पर चढ़ाएँ)

(तीसरी दोनिया का जल तीसरे पिण्डा पर चढ़ाएँ)।

☐ नीवी [धोती की टेंट में जो कुशा तिल लपेटा है] निकाल कर नैऋत्य कोण में फेंक दे।

☐ सव्य होकर नाक-कान छू लें, भगवान का ध्यान करें।

☐ अंगौछा-जनेऊ उलटा कर अपसव्य हो जाएँ।

☐ कच्चा सूत बाएँ हाथ में लेकर दाहिने हाथ से पकड़कर तीनों पिण्डा पर चढ़ा दें- मन्त्र पढ़ें–

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो द्वेष्म। एतद् वः पितरो वासः।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें –

पिता हेतु – अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य-प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पिण्डे गोत्राः पितामह-प्रपितामह-वृद्ध

प्रपितामहाः एतानि वासांसि युष्मभ्यं स्वधा।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पिण्डे पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामह्यः वासांसि युष्मभ्यं स्वधा।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पिण्डे पितृ-पितामह-प्रपितामहाः एतानि वासांसि युष्मभ्यं स्वधा।।

☐ चुपचाप मौन होकर तीनों पिण्डों का पूजन करें—

☐ गन्ध (चन्दन) तिल-फूल-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी दक्षिणा दें।

☐ शेष खीर को (बिना तिल वाली) पिण्डा के पास वेदी पर रख दें। जल छोड़ दें।

☐ दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दे।

☐ प्रेत स्थल में आकर यहाँ की पवित्री (पैंती) पहन लें।

☐ पिण्डा के ऊपर जो सूत-फूल आदि पूजन सामग्री चढ़ी है, उसे हटा दें।

☐ दाहिने हाथ में सोना या चाँदी का तार-पिण्डा काटने के लिए ले लें।

☐ नाई से पिण्डा काटने की आज्ञा लें (लोकाचार); आदेश मिलने पर बाएँ हाथ में तार पकड़ कर दाहिने हाथ से प्रेत पिण्डा को एक बार में ही ३ टुकड़ा में काट दें—निम्न मन्त्र पढ़ता रहे—
(तार को मोड़कर दो कर लें, पिण्डा पर रख कर दबा दें। तीन हिस्सा हो जायेगा।)

१. ये समानाः समनसः पितरो यम राज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो कल्पताम्।।

२. ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां ꣳ श्रीर्मयि कल्पता मस्मिन् लोके शत ꣳ समाः।।

☐ पिण्डा काटने के बाद तार नाई को दे दे।

☐ काटे हुए इन ३ हिस्से पिण्डे को क्रमशः १-१ हिस्सा रेखा (लाइन) पर रखे तीनों प्याले में (जिस प्याले में पहिले जल बाँट कर रखा था) अलग-अलग रख दें।

☐ सावधानी से काटे पिण्डे के १-१ चावल को बीन लें। वेदी पर कुछ चावल शेष न रहे।

☐ यहां की पैंती उतार दे। श्राद्ध स्थल से बाहर आकर हाथ-पाव धो लें। सव्य हो जाएँ।

☐ पितर स्थल में आकर अपने आसन पर बैठें। नाक-कान छू कर हरि स्मरण करें।

☐ यहाँ की पवित्री (पैंती) पहन लें

☐ अपसव्य हो जाएँ। तीनों पिण्डों पर चढ़े सूत-फूल-तिल आदि को हटा कर पिण्डों को साफ कर लें।

☐ पहला पिण्डा बाएँ हाथ में रख लें, और दाहिने हाथ के अंगूठे से दबाकर पिण्डा के बीच गढ़ा कर दें।
(नोट—जिस प्रकार कचौड़ी में गढ़ा कर दाल पीठी भरी जाती है; उसी प्रकार)

☐ प्रेत पिण्ड का पहला हिस्सा (जो ३ भाग में काट कर ३ प्याला में रखा है, उसे) उठाकर इसी पिण्डा के गढ़ा में भर दें—

☐ ऊपर से दबा कर प्रेत पिण्डा को पितामह के पिण्ड में अच्छी तरह मिला कर एक कर दें।

☐ दोनों को मिलाकर १ गोला पिण्डा बना कर पहली वेदी पर जहाँ से उठाया है, वही रख दें।

☐ इसी तरह दूसरा हिस्सा उठाकर दूसरे पिण्डा में मिला कर यथास्थान रख दें।

☐ तीसरा भाग तीसरे पिण्डा में मिलाकर यथास्थान रख दें।
(नोट—प्याले में १ दाना भी खीर शेष न रहे)

☐ इन पिण्डों को मिलाते समय—निम्न पढ़ता रहे—

१. ये समानाः समनसः पितरो यम राज्ये।
तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो कल्प्यताम्।।

२. ये समाना समनसो जीवा जीवेषु मामकाः।
तेषां ँ श्रीर्मयि कल्पता मस्मिन् लोके शत ँ समाः।।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

पिता हेतु— १. अद्य गोत्रस्य प्रेतस्य (गोत्रायाः प्रेतायाः) एष पिण्डः—पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानां पिण्डेन सह संयुज्यताम् अनेन सम्मेलनेन वसुलोक प्राप्तिरस्तु रुद्रलोक प्राप्तिरस्तु, आदित्यलोकप्राप्तिरस्तु।।

सधवा माता हेतु— २. अद्य गोत्रस्य प्रेतस्य (गोत्रायाः प्रेतायाः) पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामहीनां पिण्डेन सह संयुज्यताम् अनेन सम्मेलनेन वसुलोक प्राप्तिरस्तु रुद्रलोक प्राप्तिरस्तु—आदित्यलोक प्राप्तिरस्तु।।

विधवा माता हेतु— ३. अद्य गोत्रस्य प्रेतस्य (गोत्रायाः प्रेतायाः) एष पिण्ड पितृ-पितामह-प्रपितामहानां पिण्डेन सह संयुज्यताम् अनेन सम्मेलनेन वसुलोक प्राप्तिरस्तु रुद्रलोक प्राप्तिरस्तु आदित्यलोक प्राप्तिरस्तु।।

☐ तीनों पिण्डों पर चुपचाप गन्ध (चन्दन) तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा कर उनकी पूजा कर दें। हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

एष वोऽनुगतः प्रेत पितस्तन् दधामि वः।
शिव मस्त्विति शेषाणां जायतां चिरजीविनाम्।
समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो यथा वः सुसहासती।
सुपितृ लोकं गच्छ त्वं प्रेतत्वं सुपरित्यज।
स्वकीयैः पितृभिः साकं विहर त्वं यथा सुखम्।।

☐ सव्य होकर नाक-कान छू लें।

☐ दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर विश्वेदेवा के भोजन पात्र (पत्ता) पर छोड़ दें—

☐ फूल छोड़ दें—चावल छिड़कें—मन्त्र पढ़ें—

जल—शिवा आपः सन्तु।

फूल—सौमनस्य मस्तु।

चावल—अक्षतम चारिष्टं चास्तु।

☐ अपसव्य होकर। तीनों पितरों के भोजनपात्र (पत्तों) पर जल-फूल-चावल छोड़ दें।

जल—शिवा आपः सन्तु।

फूल—सौमनस्य मस्तु।

चावल—अक्षतं चारिष्टं चास्तु।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें—

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहाः दत्तैतत् अन्नपानादिकम्-अक्षय्यमस्तु।।

सधवा माता हेतु— १. अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्राः पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामह्यः दत्तैतत् अन्न पानादिकम्-अक्षय्यमस्तु।।

विधवा माता हेतु— २. अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः दत्तैतत् अन्न पानादिकम्-अक्षय्यमस्तु।।

☐ हाथ का तिल-जल-तीनों भोजन पात्रों पर छिड़क दें।

☐ सव्य होकर (जनेऊ-अंगोछा सीधा करके) दक्षिण दिशा की ओर (सामने) देख लें।

☐ दाहिने हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर धार गिराते हुए तीनों पिण्डों पर जल धारा दें—मन्त्र पढ़ें— ।।अघोराः पितरः सन्तु।।

☐ पूर्व की ओर मुख घुमा कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें—

गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभि वर्धन्तां वेदाः सन्तति रेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।
अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभे महि।
याचितारश्च नः सन्तु-मा च याचिष्म कंचन।
एताः सत्या आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः।।

☐ अपसव्य होकर—सभी पिण्डों पर से पान-सुपारी-फूल-सूत आदि पूजन सामग्री हटा दें।

☐ सभी पिण्डों पर कुशा का ३-३ टुकड़ा रख दें।

☐ १ दोनिया में जल तथा दूध मिलाकर दाहिने हाथ में लें।

☐ दाहिने हाथ के अंगूठे के सहारे (पितृ तीर्थ से) दक्षिण की ओर धार गिराते हुए तीनों पिण्डों पर जल मिश्रित दूध चढ़ा दें—मन्त्र पढ़ता रहे—

।। ऊर्जम् बहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रुतम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्।।

- ☐ झुककर तीनों पिण्डों को सूँघ लें।
- ☐ क्रमशः तीनों पिण्डों को उठाकर अलग रख दें। वेदी पर का पत्ता हटा दें।
- ☐ तीनों वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उसे उठा कर अग्नि में डाल दें।
- ☐ जनेऊ-अंगौछा सीधा कर सव्य हो जाए। नाक-कान छूकर गायत्री जप लें।

।।शंख चक्र पूजन।।

- ☐ पितर वेदी पर कुशा से ६ तथा ४ अंक लिख दें। इसकी पूजा करें। अक्षत लेकर प्रार्थना करे—

।। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर् ध्यान गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम्।।
विष्णवे नमः ।।शंखाय नमः।। चक्राय नमः
।। गदाधराय नमः।।

- ☐ हाथ का अक्षत पुष्प ६-४ पर छोड़ दे।

- ☐ ३ बार जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी दक्षिणा चढ़ा दे।
- ☐ कपूर जला कर आरती कर दे — वाक्य पढ़ता रहेः—

।। शंखाय नमः। चक्राय नमः। गदाधराय नमः। विष्णवे नमः।।

- ☐ अक्षत-फूल लेकर प्रार्थना करे—

वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः
हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च।
वर्षाभ्यश्च शरत् संज्ञ ऋतवे च नमः सदा।
आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गम् मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः
आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गम् कीर्तिं पुष्टिं वलं श्रियम्।
पशून् सुख धन धान्यं च प्राप्नुयाम् पितृ पूजनात्।।

---

१. शंख चक्र की पूजा करने का उल्लेख अन्त्य कर्म दीपक "में मिलता है" ततः पिण्ड स्थाने शंख चक्रे लिखित्वा ओम् शंखाय नमः। ओम् चक्राय नमः। इति पूजां विधाय तत्र दीपं संस्थाप्य गन्धाक्षत पुष्पैः षड्तून् पूजयेत्। प्रमाण में लिखा गया हैः—श्राद्ध तत्वे ब्रह्मपुराणे (२४१) पूजयित्वातु पिण्डस्थान् पितृँश्च प्रणमेद्दतून्।।, इति पिण्डपूजनान्तरं विहितमृतु पूजनमन्यतः।। अन्यच्च पिण्डपितृयज्ञे विहितम् पूर्वत्र निर्दिष्टमिति बोध्यम्।।

☐ हाथ का अक्षत फूल वेदी पर चढ़ा दे। इसके बाद —

☐ विश्वेदेवा के अर्घपात्र को उठाकर बगल रख दे। अर्थात् स्थान से हिला दे चला दे। कुछ लोग अर्घपात्र में रखी कुशपवित्री की गांठ को भी खोलते हैं।

☐ जनेऊ-अंगोछा उलटा कर अपसव्य हो जाय।

☐ आसन से उठ कर प्रेत श्राद्ध स्थल में आकर प्रेत आसन के पास जो अर्घपात्र (पियाला) उलटा रखा है, उसे भी सीधा कर दे। अपने आसन पर बैठे।

☐ इसी तरह पितरों के अर्घपात्र ३ पियाला जो उलटकर रखा है, उसे सीधा कर दें।

☐ फिर जनेऊ-अंगोछा सीधा कर सव्य होकर नाक-कान छू ले। पूर्व मुख कर ले,

☐ त्रिकुश-जव-जल लेकर दक्षिणा संकल्प कर ले,

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानां यथानाम धेयानां श्राद्ध-सम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतत्-श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम्-उत्सृजे।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामहीनाम् देवीनाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवानाम् कृतैतत् श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणा द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम्-उत्सृजे।।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां नामधेयानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवानाम् कृतैतत् श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ जनेऊ अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय, दक्षिण मुख कर ले।

☐ मोटक-तिल-जल लेकर प्रेत के लिये दक्षिणा संकल्प करे—

।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) कृतैतत् सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम्

दक्षिणा द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम् उत्सृजे।।

☐ फिर-मोटक-तिल-जल लेकर पितरो की दक्षिणा संकल्प करे।

पिता हेतु— अद्य अस्मद् पितुः यथानाम् गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम् श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम् उत्सृजे।।

सधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितामही-प्रपितामही वृद्धप्रपितामहीनां श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

विधवा माता हेतु— अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

☐ जनेऊ-अंगौछा सीधा कर सव्य हो जाय, नाक-कान छू ले।

☐ दाहिने हाथ से विश्वदेवा के आसन पर जवा छिड़क कर विसर्जन करे—मन्त्र पढ़े—

।। विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।।

☐ जनेऊ-अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय।

☐ दाहिने हाथ में तिल लेकर प्रेत आसन पर छिड़क दे।

☐ फिर तिल लेकर तीनों पितर-आसन पर छिड़क कर विसर्जन करे—मन्त्र पढ़े—

आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या दे मे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे।
आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्त्वेन गम्यात्।।

☐ दाहिने हाथ में जवा-तिल जल लेकर दीपक बुझा दे।

।। गोदान।।

☐ सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले भगवान का ध्यान कर ले।

☐ कुछ-अक्षत-जल तथा द्रव्य लेकर गोदान संकल्प करे—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य अमुक नाम्नः (मातुः

(नोट—प्रत्येक संकल्प के बाद हाथ का जल-जवा-तिल आदि ब्राह्मण के हाथ में दे दे)

गोत्रायाः नाम्न्याः) प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक उत्तमलोक प्राप्तिकामनयः इदं गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को गोदान दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।।अद्य कृतैतत् गोदान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण को सांगता दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ हाथ जोड़कर गौ की प्रार्थना कर ले

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।

☐ पूजा के लोटा में जल-दूध लेकर धार गिराते हुए पितर-आसन-विश्वेदवा—आसन—प्रेतासन—सम्पूर्ण श्राद्ध वस्तु के चारो ओर तीन परिक्रमा करे—

☐ तीसरी परिक्रमा पूरी करके लोटा अपने आसन के आगे भूमि पर उलटा रख दे।

☐ फिर लोटा उठाकर हाथ की अंगुली से ३ बार बजा दे—मन्त्र पढ़े—

वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषू विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।

अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर् देवयानैः।।

☐ अपने आसन से पूर्व की ओर ८ कदम आगे चले।

☐ जनेऊ अंगौछा सीधा कर सव्य होकर नाक-कान छू ले। गायत्री का जप कर ले। प्रार्थना करें।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।
प्रमादात् कुर्वताम् कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः परिपूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। विष्णवे नमः।।

☐ श्राद्ध स्थल में जो भी प्रयुक्त सामग्री—दोनिया-पत्तल-पियाला-तिल-चावल-फूल-दीप-वेदी-खीर-आदि है सब बटोर कर नदी-तालाब अथवा बाग-बगीचे में एक किनारे छोड़ दे—कुशा को जल में नहीं फेंकना चाहिए। अन्यत्र रख दे।।

प्रत्यक्ष गौ रहने पर वैतरणी तथा गौ की पूजा करे, तब गौदान करे वैतरणी विधि परिशिष्ट में देखें।

- ☐ हाथ पांव धोकर फिर शय्या के पास आवे।
- ☐ महाब्राह्मण को पूरी-मिठाई-दही-खीर आदि खिलावे। खीर जरूर खिलानी चाहिए।
- ☐ महाब्राह्मण गौ-कुत्ता-कौआ को गोग्रास देकर भोजन करे।
- ☐ भोजन के बाद ब्राह्मण के माथ में चंदन-अक्षत लगाकर पान-दक्षिणा दे।
- ☐ महाब्राह्मण को शय्या पर बिठा कर उसका पांव दबाएँ। दान-दक्षिणा देकर ब्राह्मण से सुफल मांगे।
- ☐ महाब्राह्मण यजमान के पीठ पर हाथ रख कर आशीर्वाद दे। सुफल बोले।
- ☐ यजमान-नदी-तालाब-कुआँ-बावली-पर स्नान कर वस्त्र बदल कर घर आए।
- ☐ मार्ग में आम्र पल्लव तथा हरा साग लेकर घर आना चाहिए।

घर में आकर गौरी गणपति पूजा करे

।। वैतरणी गोदान विधि।।

- ☐ कुछ लोग प्रत्यक्ष गोदान करते हैं तथा उसे वैतरणी पार करते हैं, उसके लिए यह विधि नीचे लिखी जा रही है।
- ☐ दक्षिण दिशा में ४ हाथ लम्बा (पूर्व-पश्चिम) २ हाथ चौड़ा (उत्तर-दक्षिण) तथा १ हाथ गहरा एक गढ़ा खोद ले।
- ☐ गढ़ा में जल भर दे (इसे ही वैतरणी माने)
- ☐ इस वैतरणी (गढ़ा) के नैऋत्य कोण में (दक्षिण-पश्चिम का कोण में) ऊख की नाव रखे।
- ☐ ऊख की नाव के ऊपर एक ताँबे की कटोरी में तिल भर कर रखे।
- ☐ तिल कटोरी पर एक सोने की प्रतिमा (धर्मराज) अथवा १ सोने का टुकड़ा रख दे।
- ☐ नाव पर कपास-नमक-घी-गुड़ भी यथाशक्ति रख दे। १ लोहे का छड़ (लौह दण्ड) रखे।
- ☐ गौ को वैतरणी के उत्तर की ओर पश्चिममुख खड़ी करे। यजमान पूर्वमुख खड़ा हो। गौ को सामने कर ले। सव्य होकर ही -
- ☐ आचमन-प्राणायाम-गायत्री जप करे। कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

टिप्पणी—प्रत्यक्ष गोदान करना हो तो ऊख की नाव तथा तिल-पात्र का दान पहले नहीं करना चाहिए यहीं पर गोदान-वैतरणी पूजन के समय होता है।

।।अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक प्रेतस्य वैतरणी उत्तारणार्थम् गोपूजनं गोदानं चाहं करिष्ये।।

☐ हाथ का कुश-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दें।

☐ पुष्प-अक्षत से गौ की पूजा कर दे। गौ को खाने के लिये कुछ अन्न दे दे।

☐ गौ की पूजा करते समय निम्न वाक्य पढ़ता रहे—

।।सोपकरण गवे नमः।। ओम् कपिले नन्दे नमः। ओम् कपिले भद्रिके नमः। ओम् कपिले सुशीले नमः। कपिले सुरभि प्रिये नमः। ओम कपिले सुमनसे नमः। ओम् भुक्तिमुक्तिप्रदे नमः।।

☐ सुन्दर वस्त्र और अलंकार से गौ को अलंकृत कर दे।

☐ गौ के साथ बछड़ा हो तो उसे भी अलंकृत कर दे। हाथ में फूल लेकर गौ की प्रार्थना करे—

ओम् कपिले सर्वदेवानाम् पूजनीयासि रोहिणी।
तीर्थ धेनुमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

☐ फूल गौ ऊपर के छोड़ दे।

☐ गोदान लेने वाले ब्राह्मण की पूजा करे—अक्षत-पुष्प ब्राह्मण पर चढ़ा दे।

।। देय ब्राह्मणाय नमः।।

☐ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर ब्राह्मण का वरण करे—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तिकामनया गोदानकर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं गोदान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में वरण सामग्री दे। ब्राह्मण लेकर कहे— ।। वृतोऽस्मि।।

☐ कुश-अक्षत लेकर गौ की पूँछ पकड़ कर—संकल्प पढ़े—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक प्रेतस्य स्वर्गप्राप्ति कामनया इमां गां (कपिलाम्) (सवत्साम्) यथाशक्ति-अलंकृताम्-रुद्रदैवताम्-गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में कुश-अक्षत-पूँछ पकड़ा दे। ब्राह्मण लेकर कहे— ।। स्वस्ति।।

☐ कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर गोदान सांगता का संकल्प करे—

।। अद्य कृतैतत् गोदान प्रतिष्ठा सांगता संसिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

टिप्पणी—कुछ लोग गो पुच्छ तर्पण भी करते हैं, अतः गौ का दान करने से पूर्व तर्पण करे। तर्पण विधि आगे दी गयी है।

☐ ब्राह्मण के हाथ में दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति।।

☐ हाथ में फूल लेकर गौ की प्रार्थना करे—

ओम् या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्व वस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम शान्तिं प्रयच्छतु।।१।।
देहस्था या च रूद्राणी शंकरस्य सदा प्रिया।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।२।।
विष्णु वक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा या च विभावसोः।
चन्द्रार्क ऋक्ष शक्तिर्या धेनुरूपास्तु सा श्रिये।।३।।
चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मी धनदस्य च।
लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे।।४।।
स्वधा तु पितृ मुख्यानां स्वाहा यज्ञ भुजां यतः।
सर्व पाप हरा धेनुस्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे।।५।।
अर्चितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण पूजिता।
सुरभि हर मे पाप यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।६।।
गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च।।७।।

☐ फूल गौ के ऊपर चढ़ादे।

☐ गौ को वैतरणी के नैऋत्य कोण पर लाकर खड़ी करे (जहाँ नौका है)

☐ तिल-अक्षत-पुष्प लेकर ऊख की नौका पर तिलपात्र में रखी हुयी स्वर्ण मूर्ति पर चढ़ा दे।

।। पितुः प्रेतस्य वैतरणी-उत्तरणार्थम् श्री यज्ञ पुरुष त्वं प्रीणीहि।।

☐ नौका की पूजा करे—तिल-अक्षत-पुष्प चढ़ा दे। ।। इक्षुमयी नौकायै नमः।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में जल दे— ।। अद्य इक्षुमयी नौकां ददानि।।

☐ ब्राह्मण कहे ।। [illegible]स्व।।

☐ नौका तथा ब्राह्मण पर जल छिड़क कर—दाहिने हाथ में कुश-तिल-जल ले।

☐ बाएँ हाथ से नौका को छू ले—संकल्प पढ़े—

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति कामनया यम मार्गे वैतरणी उत्तरणार्थम् इमाम्-इक्षुमयी नौकां सकार्पास-तिलपात्र सहिताम् यज्ञपुरुष दैवताम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

☐ ब्राह्मण के हाथ में कुश-तिल देकर नौका स्पर्श करा दे।

☐ कुश-तिल-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे—संकल्प पढ़े—

।। अद्य कृतैतत् इक्षुमयी नौकादान सांगता सिध्यर्थम् इदं द्रव्यम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

- ☐ सांगता ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण लेकर कर कहे—।। स्वस्ति।।
- ☐ वैतरणी (गढ़ा) में तिल-अक्षत-फूल छोड़कर चुपचाप वैतरणी की पूजा कर दे।
- ☐ फूल लेकर वैतरणी की प्रार्थना करे—

यमद्वारे महोघोरे श्रुत्वा वैतरणी नदीम्। तर्तुकामो ददाम्येनाम् तुभ्यं वैतरण्यै नमः।।

विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ मामुद्धर महीसुर। सदक्षिणा मया दत्ता तुभ्यं वैतरण्यै नमः।।

- ☐ गौ-ब्राह्मण-नौका की परिक्रमा करे। परिक्रमा कर फिर प्रार्थना करे—

धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये। उत्तरणार्थम् तु देवेशि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते।।

- ☐ फूल वैतरणी तट पर छोड़ दे। श्राद्धकर्त्ता गौ को आगे कर के उसकी पूँछ पकड़ ले।
- ☐ नौका तथा ब्राह्मण को साथ लेकर ईशान कोण से उस पार जाय (अर्थात् गौ को गढ़े पर से डका दे)

टिप्पणी—गौ को इस नैऋत्य कोण से ईशान कोण में गढ़े के ऊपर से पार करा दे।

☐ कुछ लोग वैतरणी पार कराने के बाद सांगता निमित्त गोदान संकल्प करते हैं। देशाचार के अनुसार करना चाहिए।

।। गौ पुच्छ तर्पण।।

- ☐ पूर्व मुख होकर अपना नाक-कान छूकर प्राणायाम करे।
- ☐ कुश-जवा-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रस्य पितुः (नाम ले) प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तिकामनया उत्तम लोकप्राप्तये च गौ पुच्छ तर्पणमहं करिष्ये।।

- ☐ कुश-जवा-जल सामने भूमि पर छोड़ दे।
- ☐ कुश-जवा तथा गौ पूँछ पकड़कर जल से (पहले) देवताओं का तर्पण करे—

१. ब्रह्माद्या देवताः सर्वा ऋषयो मुनयस्तथा। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।

२. असुरा देवपत्न्यश्च मातरश्चण्डिकास्तथा। ताः सर्वास्तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।

३. दिक्पालाः लोकपालाश्च गृह देवाधिदेवताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।

४. विश्वे देवास्तथाऽदित्याः साध्याश्चैव मरुद्गणाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।

५. क्षेत्र पीठोप पीठादि नद नद्याश्च सागराः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।

६. पाताले नागपत्यश्च नागाश्चैव सपर्वताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

७. पृथिव्यापश्च तेजस्श्च वायु राकाशमेव च। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

८. पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गणा गंधर्व राक्षसाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

९. दिवि भुवन्तरिक्षे च ये च पातालवासिनः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१०. शिवः शिवा तथा विष्णुः सिद्धिर्लक्ष्मी सरस्वती। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

११. तपोधनश्च भगवान् व्यक्ताव्यक्तः परेश्वरः। सः सर्वस् तृप्ति मायातु गो पुच्छेषु तर्पितः।।

१२. क्षेत्रौषधीर्लता वृक्षाः वनस्पत्यादि देवताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१३. कपिलः शेषनागश्च तक्षकोऽनन्त एव च। सः सर्वस् तृप्ति मायातु गो पुच्छेषु तर्पितः।।

१४. अन्ये जलचरा जीवा असंख्यातास्त्वनेकशः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१५. चतुर्दश यमाश्चैव ये चान्ये यम किंकराः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१६. सर्वे तु यक्ष राजानः पशवः पक्षिणस्तथा। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१७. स्वेद जोद्भिज जातीया अण्डजाश्च जरायुजाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१८. सनकाद्याः ऋषयस्तेषां पत्न्यस्तथैव च। शान्तिदाः शुभदास्ते स्युः गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

- ☐ हाथ का जवा-जल-कुश तथा गौ पुच्छ छोड़ दे।
- ☐ अपसव्य हो जाय—दक्षिण की ओर मुख कर ले।
- ☐ मोटक-तिल दाहिने हाथ में लेकर गौ की पूँछ पकड़कर पितरों को शुद्ध जल से तर्पण करे—
- ☐ मन्त्र निम्न हैं—

१. ओम स्वधा मातृभ्यो वन्धुभ्यश्चापि तृप्तये। मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये चान्ये पितृ पक्षकाः।।
गुरु श्वसुर बन्धूनां ये चान्ये कुल संभवाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२. ये चान्ये लुप्त पिण्डाश्च पुत्रदार विवर्जिताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

३. आब्राह्मणो ये पितृवंश जाता मातुस्तथा वंश भवामदीयाः।
कुलद्वये ये मम वंश भूता भृत्यास्तथैवाश्रित सेवकाश्च।
ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

४. मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षा दृष्टाश्च पृष्ठाश्च कृतोपकाराः।

देशान्तरे ये मम संगताश्च तेभ्यः स्वधाकृत्य इदं ददामि।

ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

५. ये वांधवाऽवांधवा वा ये अन्य जन्मनि स्व वांधवाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

६. अकालेऽपगता ये च ये चान्धा पंगवस्तथा। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

७. विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाताः कुले मम। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

८. आमगर्भाश्च ये केचिदागताः पुच्छ गोचरे। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

९. वृष योनिगता ये च कीट काक पतंगकाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१०.किंकरैः पीड्यमाना ये सुतरा मिक्षुकाण्डवत्। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

११.जलेन पीडिताः पंके यमदूतैर्महावलैः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१२.यंत्रमध्ये प्रपीड्यन्ते प्रेत पीड़ा स्ववस्थिताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१३.कुष्ठापस्मार लूतादि जलोदर भगन्दरैः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१४. कारागृहे मृता ये च सिंह व्याघ्रहताश्च ये। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१५. चाण्डालात् निहता मार्गे आशौचशयने मृताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१६.ब्रह्मस्व हारिणो ये च सुरापाः स्वर्ण हारिणः ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१७.कुब्जाश्च वधिरा ये च मातृ पितृ कुलोद्भवाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१८.संसार रहिता ये च रौरवादिषु ये गताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

१९.सर्पयोनिगता ये च तृण गुल्म लता स्थिताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२०.देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक् प्रेत पिशाचकाः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२१.कृमि कीट पतंगत्वं गता ये च स्व कर्मणा। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२२.पश्वादि योनिजाता ये वृश्चिकादिषु ये गताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२३.आसुरी योनिमुत्पन्नाः पिशाचत्वं च ये गताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२४.उद्वन्ध नरके जाता ऊर्ध्व वक्त्र स्थिताश्च ये। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२५. महापातकजान् घोरान् नरकान् प्राप्य दारुणान्। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२६.महाप्रेता महाभागाः प्रेत पूर्वे च ये स्थिताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२७.अगम्या गामिनो ये च ब्रत भंगकराश्च ये। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२८. जलाग्निभिर्मृता ये च अघोरा धर्मवर्जिताः। ते सर्वे तृप्ति मायान्तु गो पुच्छेषु तर्पिताः।।

२९. ये प्रेतभावमापन्ना ये चान्ये श्राद्ध वर्जिताः। गो पुच्छोदकेनैव लभन्तां तृप्तिमुत्तमाम्।।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अमुक गोत्रस्य पितुः (नाम) प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति कांक्षया गो-पुच्छकाञ्जलिर्मया दीयते-तवोपतिष्ठताम्।।

☐ इतना पढ़ने के बाद हाथ का मोटक-तिल-जल सामने भूमि पर छोड़ दे, गौ का पूंछ छोड़ दे।

।। इति गोपुच्छतर्पण।।

संकल्प में विभक्ति का प्रयोग

☐ श्राद्ध में संकल्प का ही विशेष महत्व है, संकल्प में विभक्ति का प्रयोग करने में कठिनाई नहीं हो, इसलिए नीचे पुलिङ्ग तथा स्त्री लिंग के १८ प्रमुख सम्बन्धियों का (व्यवहार में जिनके श्राद्ध करने की बात आ सकती है, उनकी) श्राद्ध मे प्रयुक्त होने वाली विभक्तियों को लिखा गया है।

☐ जिस सम्बन्धी का श्राद्ध किया जा रहा है, संकल्प में यथास्थान उसके लिये आवश्यक विभक्ति का प्रयोग कर लेना चाहिए। —पद्धति में माता-पिता को प्रतीक मान कर संकल्प की रचना है।

उदाहरण के लिए—कुछ रचना नीचे दी जा रही है, इसी के अनुसार पिता-माता शब्द के स्थान पर उस सम्बन्धी को ले लेना चाहिए।

कहाँ किस विभक्ति का प्रयोग होगा—

।। अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयाऽवाहनेतथा।

अन्नदाने चतुर्थी स्याच्छेशाः सम्बुद्धयः स्मृताः।।

षष्ठी विभक्ति—आसनदान संकल्प तथा अक्षय्य में —चतुर्थी विभक्ति—अन्नदान संकल्प में सम्बोधन विभक्ति—अर्घदान—आदि में —द्वितीया विभक्ति—आवाहन में

जैसे—१. अमुक गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य—में पितुः षष्ठी है, अतः पितुः के स्थान पर षष्ठी वाले शब्दों का प्रयोग करें।

२. अमुक गोत्र पितः प्रेत—में पितः सम्बोधन है।

३. एतत्ते पितः वासः—में पितः सम्बोधन है।

—अतः पितः के स्थान पर सम्बोधन वाले शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

४ पित्रे स्थानमसि —में पित्रे चतुर्थी है, चतुर्थी वाले शब्दों का प्रयोग करे।

५. अघोरः पिता-अस्तु में पिता—प्रथमा है, अतः प्रथमा वाले शब्दों का प्रयोग करे।

इसी तरह स्त्रीलिंग में —गोत्रायाः मातुः—षष्ठी

गोत्रे मातः—सम्बोधन —एतत्ते मातः वासः—सम्बोधन

मात्रे स्थानमसि—चतुर्थी —अघोरा माता अस्तु—प्रथमा—है।

☐ जिस सम्बन्धी का श्राद्ध किया जा रहा हो उसकी संज्ञा देखकर माता के स्थान पर उसमें वहीं विभक्ति लगाकर संकल्प पढ़े—

स्त्रीलिंग	प्रथमा	सम्बोधन	द्वितीया	चतुर्थी	षष्ठी
गोत्र-का	गोत्रा	गोत्रे	गोत्राम्	गोत्रायै	गोत्रायाः
प्रेत-का	प्रेता	प्रेते	प्रेताम्	प्रेतायै	प्रेतायाः
१. माता	माता	मातः	मातरम्	मात्रे	मातुः
२. पितामही	पितामही	पितामही	पितमहीम्	पितामह्यै	पितामह्याः
३. नानी	मातामही	मातामही	मातमहीम्	मातामह्यै	मातामह्याः
४. स्त्री	पत्नी	पत्नी	पत्नीम्	पत्न्यै	पत्न्याः
५. बहिन	भगिनी	भगिनी	भगिनीम्	भगिन्यै	भगिन्याः
६. सास	श्वश्रू	श्वश्रु	श्वश्रूम्	श्वश्र्वै	श्वश्र्वाः
७. चाची	पितृव्यपत्नी	पितृव्यपत्नी	पितृव्यपत्नीम्	पितृव्यपत्न्यै	पितृव्यपत्न्याः
८. भाई की स्त्री	भ्रातृपत्नी	भ्रातृपत्नी	भ्रातृपत्नीम्	भ्रातृपत्न्यै	भ्रातृपत्न्याः

पुलिंग	प्रथमा	सम्बोधन	द्वितीया	चतर्थी	षष्ठी
गोत्र	गोत्रः	गोत्र	गोत्रम्	गोत्राय	गोत्रस्य
प्रेत	प्रेतः	प्रेत	प्रेतम्	प्रेताय	प्रेतस्य

९. पिता	पिता	पितः	पितरम्	पित्रे	पितुः
१०. पितामह	पितामहः	पितामह	पितामहम्	पितामहाय	पितामहस्य
११. मातामह (नाना)	मातामहः	मातामह	मातामहम्	मातामहाय	मातामहस्य
१२. पितृव्य	पितृव्यः	पितृव्य	पितृव्यम्	पितृव्याय	पितृव्यस्य
१३. मामा	मातुलः	मातुल	मातुलम्	मातुलाय	मातुलस्य
१४. पुत्र	पुत्रः	पुत्र	पुत्रम्	पुत्राय	पुत्रस्य
१५. ससुर	श्वसुरः	श्वसुर	श्वसुरम्	श्वसुराय	श्वसुरस्य
१६. भाई	भ्राता	भ्रातः	भ्रातरम्	भ्रात्रे	भ्रातुः
१७. पति	पतिः	पते	पतिम्	पतये	पत्युः

श्राद्धात् परतरन्नास्ति श्रेयस्कर मुदाहतम्।
तस्मात् सर्व प्रयत्नेन श्राद्धं कुर्याद् विचक्षणः।।

।। इति।।

एकादशाहचक्र

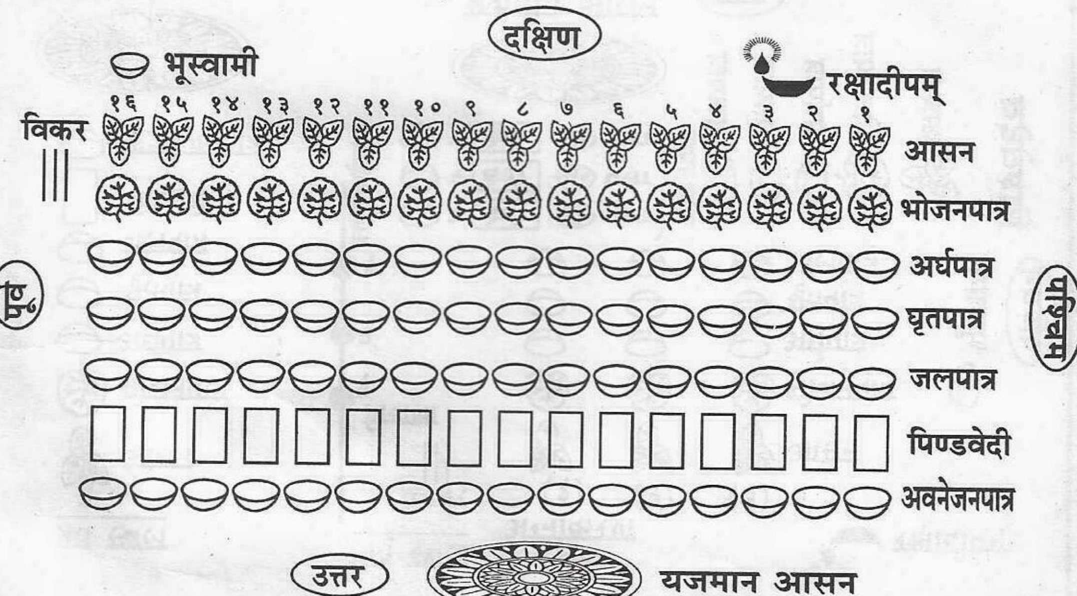

टिप्पणी-पश्चिम से पूर्व कुशा मोटक रखें और उसी क्रम से पूजा करें।

Home